चकमक

अक्टूबर 2005

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00

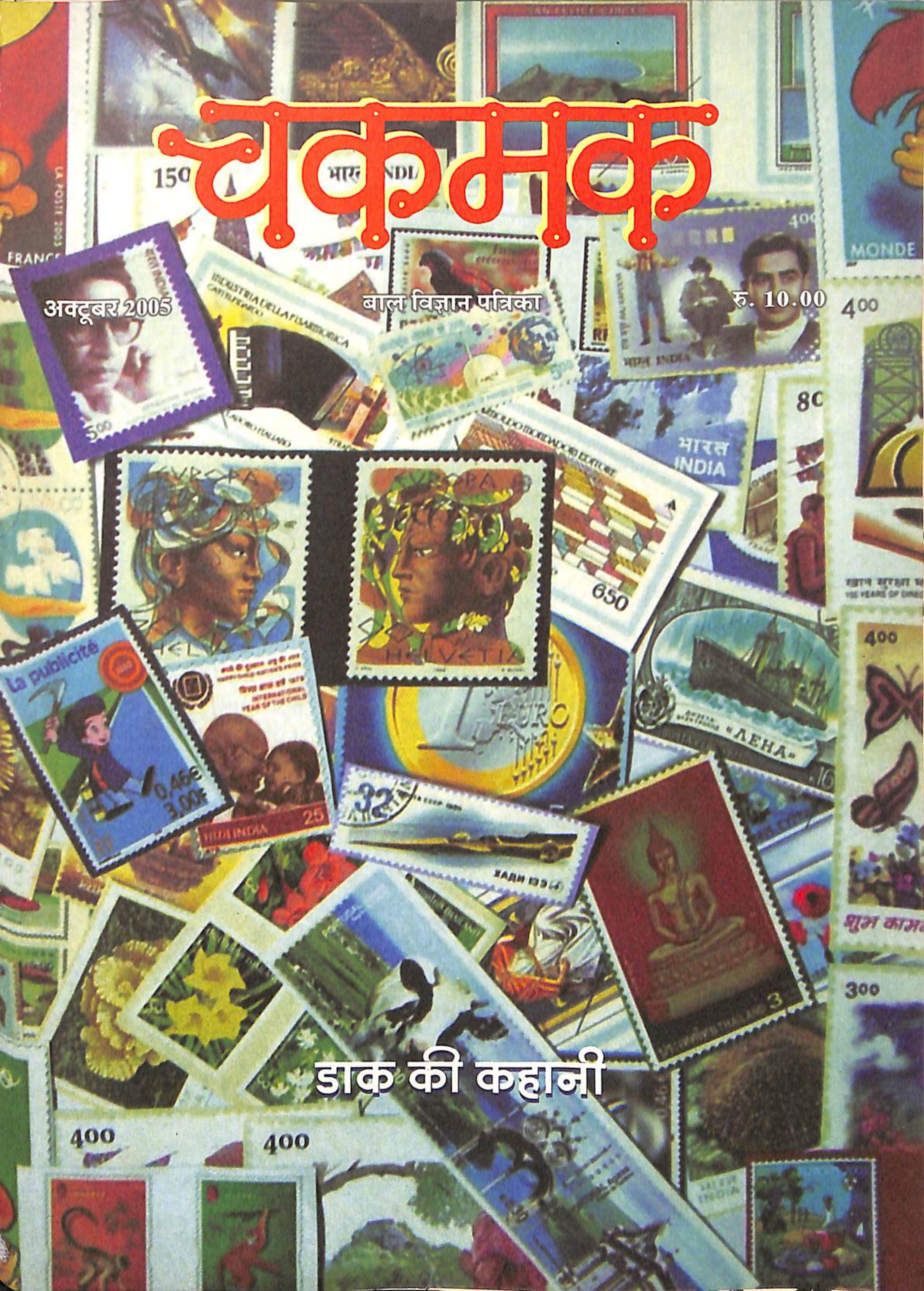

डाक की कहानी

शाज़िला, छठी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

क्या क्या है इस अंक में...

लेख

डाक की कहानी	6
इंटरनेट क्या है	13
कंगारू	40

कहानी

डींग	8
माचिस वाली बच्ची	19
रानी की कहानी	34

कविताएँ

समोसे भाई	12
भाई-भाई	32

विशेष

देख तमाशा हड्डी का	18
कागज़ पर चढ़ें	26
कहानी लिखो	27
सपने	29
चित्र बनाओ	30
अधूरी कविता पूरी करो	39

हमेशा की तरह

अपनी बात	2
मेरा पन्ना	3
तुम भी बनाओ	16
चित्र पहेली	24
प्रयोगशाला	31
सुडोकू	33
माथापच्ची	38

चकमक पोस्टर

बहुरूप गाँधी 41

आवरण : गोपीचन्द श्रीनागर के सौजन्य से

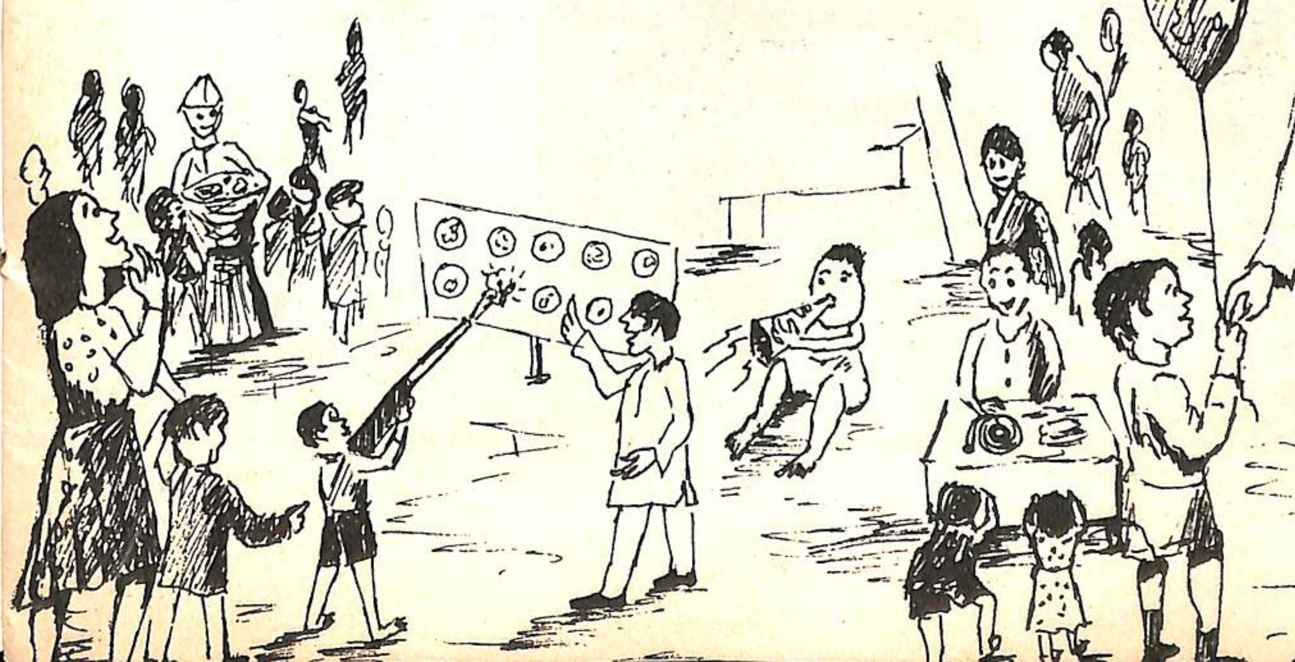

इस बार की बात...

दोस्तो,

शायद तुम्हें पता होगा कि सन् 2005 को अंतर्राष्ट्रीय भौतिकी वर्ष घोषित किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है कि ठीक सौ साल पहले 1905 में प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंसटीन ने अपने चार महत्वपूर्ण शोध निबंध प्रकाशित करवाए थे। इन निबंधों ने सारी दुनिया के वैज्ञानिकों के सोचने समझने के तरीके को हमेशा के लिए बदल दिया था।

पिछले अंक में हमने दिल्ली के अचिंत्य शर्मा का बनाया आइंसटीन का चित्र छापा था। अचिंत्य ने यह चित्र इसी प्रसंग में बनाया था। इससे सौ साल पहले यानी सन् 1805 में परीकथाओं के विश्वप्रसिद्ध लेखक हेंस एण्डरसन का जन्म हुआ था। उनकी कहानियों का विश्व की बहुत सारी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आज भी दुनिया भर के बच्चे एण्डरसन की कहानियाँ बहुत चाव से पढ़ते हैं। इस अंक में उनकी एक मार्मिक कहानी 'माचिस वाली बच्ची' छाप रहे हैं।

यह वर्ष मुंशी प्रेमचंद की एक सौ पच्चीसवीं सालगिरह का भी वर्ष है। मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ हर जगह मिल जाएँगी। खोजकर पढ़ना!

1905 में ही रूस में एक बड़ी क्राँति हुई थी। हालाँकि वह सफल नहीं हो पाई। 1905 में ही अँग्रेज़ों ने बंगाल के दो टुकड़े कर दिए थे। बांग्लादेश बन जाने के बाद आज भी न जाने क्यों हम अपने बंगाल को पश्चिमी बंगाल कहते हैं। (जबकि अपने पंजाब को पूर्वी पंजाब नहीं कहते)।

चकमक के पिछले अंक में हमने एक कविता छापी थी *ये बात समझ में आई नहीं*। कविता पाठकों को बहुत पसंद आई। कुछ पाठकों ने पूछा है कि यह कविता किसने लिखी है? हम नहीं जानते। अगर किसी को मालूम हो तो हमें ज़रूर बताए।

आने वाले त्यौहारों के लिए शुभकामनाएँ

तुम्हारा
स्वयं प्रकाश

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 21, अंक-3, अक्टूबर 2005

सम्पादन	सज्जा
विनोद रायना	राकेश खत्री
अंजलि नरोना	**वितरण**
स्वयं प्रकाश	कमल सिंह
सुशील शुक्ल	अनिल लोखण्डे
संगीता गुंदेचा	मनोज निगम
विज्ञान परामर्श	**सहयोग**
सुशील जोशी	शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन - 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति	10.00 रुपए
छमाही	50.00 रुपए
वार्षिक	100.00 रुपए
दो साल	180.00 रुपए
आजीवन	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

डाकिया आया है

एक डाकिया आया है,
घर की घंटी बजाया है,
खाकी कपड़ा वो पहना है,
बैग टाँग कर आया है।
साइकिल से वो आया है,
मेरी नानी की चिट्ठी लाया है,
मम्मी दौड़ी आई है,
दीदी दौड़ी आई है।
सबको वो हँसाया है,
एक डाकिया आया है,
घर की घंटी बजाया है।

- वर्तिका सिंह, चौथी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

पीला फूल

आज सुबह-सुबह मैं तालाब पर गई। मैंने वहाँ मछली देखी। मछली अपना मुँह निकाले बैठी थी। फिर मैंने बगीचे से एक फूल तोड़ा। फूल का रंग पीला था पर मुझे तो लाल फूल चाहिए था। क्योंकि मेरी सीहोर वाली मौसी का छोटा-सा बच्चा हुआ है न। उसे देने के लिए। पर मैं तो अब पीला फूल ही दूँगी। घर आई तो मम्मी ने कहा कि फूल नहीं तोड़ना था। वह तो पेड़ पर ही सुन्दर दिखता है।

- स्वाति जैन, चौथी, सतना, म.प्र.

- सौम्या तिवारी, चौथी, उज्जैन, म.प्र.

- देवांशी शर्मा, अलीगढ़, उ.प्र.

पेंसिल की छीलन से बना चित्र

- प्रियांशी सिंह, आठवीं, होशंगाबाद, म.प्र.

- जयन्त सोलंकी, भोपाल, म.प्र.

हमारे बैंड सर

हमारे बैंड सर बहुत अच्छे हैं। हमें हमेशा बहुत प्यार करते हैं। बच्चों के साथ मज़ाक भी करते हैं। और सबको खूब हँसाते भी हैं।

जब भी हमारा वैस्टर्न म्यूज़िक का पीरियड होता, सर के आने से पहले ही बच्चों में जोश आ जाता। कोई नाचने लगता, कोई गाने लगता, कोई डेस्क पर हाथ मारकर तबला बजाता। कोई मुँह से पूँ पूँ पूँ... आवाज़ निकालकर चिल्लाता "सावधान, हमारे बैंड सर पधार रहे हैं!"

सर मुस्कराते हुए क्लास में आते तो सब बच्चे मुस्कुराने लगते।

सर हमें नए-नए गीत लिखाते या 'हिम बुक' के गाने गवाते। और जब कभी सर को मज़ाक करना होता तो किसी बच्चे को अपने पास बुलाते और पूछते- "तुम्हारा नाम क्या है?"

एक बार उन्होंने एक लड़की से पूछा तो वह बोली- "मेरा नाम ऋचा है।" तो सर बोले- "क्या, रिक्शा?"

एक दिन एक लड़की ने कहा, मेरा नाम श्रुति है। तो सर ने कहा- "क्या? फ्रूटी! कहाँ है फ्रूटी? बहुत प्यास लगी है।"

एक बार एक बच्चा जब अपना नाम बोलने ही जा रहा था तभी एक दूसरा बच्चा बोला- "सर इसका नाम मोटा है।" तो सर ने कहा- "लोटा! ये लोटा कहाँ से आ गया?"

एक बार एक नई लड़की आई हमारी क्लास में। सर ने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? वह बोली- "शुभम्!" तो सर चिल्लाए- "बस! भागो रे भागो, बम फूटने वाला है।"

सर की मज़ेदार बातों से हम हँसते-हँसते लोटपोट हो जाते। सर कभी-कभी बच्चों को मज़ाक-मज़ाक में डाँटते और कभी-कभी प्यार से मारते भी थे। लेकिन बच्चे उनकी डाँट खाकर और मार खाकर भी हँसते थे।

यह हमें बहुत दिन के बाद पता चला कि बैंड सर का असली नाम बैंड सर नहीं, 'बैंट सर' है। तब भी हम उन्हें बैंड सर ही कहते और सर कभी इस बात के लिए बुरा नहीं मानते।

बैंड सर अब हमारा स्कूल छोड़कर कहीं और काम करने लगे हैं। जब हमें यह पता चला कि बैंड सर स्कूल छोड़कर चले गए हैं तब हमें बहुत बुरा लगा।

लेकिन बैंड सर बीच-बीच में आकर हमसे मिलते रहते हैं और हमें खुश करके वापस चले जाते हैं। बैंड सर चाहते हैं कि हम सब बच्चे खूब मन लगाकर पढ़ें और जीवन में आगे बढ़ें।

- शिवांक, नवीं, दिल्ली

रजतकुमार, चौथी, अमरापुर, गुजरात

डाक की कहानी

गोपीचन्द श्रीनागर

आज तुम्हें किसी को चिट्ठी लिखना हो तो तुम सीधे डाकघर जाओगे, एक पोस्टकार्ड खरीदोगे और उस पर चिट्ठी और पाने वाले का पता लिखकर लैटरबॉक्स में डाल दोगे। और बेफिक्र हो जाओगे। पर क्या तुम सोच सकते हो कि किसी समय अपने प्रियजनों तक डाक से संदेश भेजने की यह सुविधा सिर्फ राजा-महाराजाओं को प्राप्त थी? अभी कोई डेढ़ सौ साल पहले तक सामान्य आदमी दूसरे शहर या प्रान्त में रहनेवाले अपने मित्र या रिश्तेदार को न पत्र भेज सकता था, न तार, न मनी आर्डर।

आओ देखें, सार्वजनिक डाकसेवा की शुरूआत कब और कैसे हुई?

संदेश भेजने के पुराने तरीके

कबूतरों से संदेश भेजने की कहानियाँ तो तुमने भी सुनी होंगी। पता नहीं पालतू कबूतर के पैर में बँधी चिट्ठी सही आदमी तक पहुँचती थी या नहीं, पर यह सच है कि संदेश भेजने का काम पुराने ज़माने में संदेशवाहक या हरकारे किया करते थे। इसे हम डाक व्यवस्था की शुरूआत कह सकते हैं। यह शुरूआत ईसा से कोई एक हज़ार साल पहले चीन में हुई थी। चीनी इतिहासकार और दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने लिखा है कि एक जगह से दूसरी जगह राजा का संदेश ले जाने वाले ये घुड़सवार हरकारे एक दिन और एक रात में 124 मील तक का सफ़र पूरा कर लेते थे। हर नौ मील पर एक डाक चौकी होती थी जहाँ हरकारे विश्राम करते थे और अपने घोड़े बदलते थे।

भारत में डाक व्यवस्था की शुरूआत चौदहवीं शताब्दी में शेरशाह सूरी द्वारा की गई। इसके बारे में अरब यात्री इब्नबतूता ने लिखा है। सोलहवीं सदी में बादशाह अकबर ने इस व्यवस्था को मज़बूत किया। सन् 1774 में जाकर यह आम आदमी को नसीब हुई। लेकिन इसका लाभ उठाने वाले सिर्फ व्यापारी लोग थे। यह व्यवस्था भी ज़्यादा भरोसेमंद नहीं थी।

सन् 1837 में अंग्रेज़ों ने सरकारी डाक की शुरूआत की। यह सुविधा सिर्फ अंग्रेज़ शासकों के लिए थी। सन् 1852 में पहली बार सिंध प्रान्त में (जो अब पाकिस्तान में है) जनता के लिए डाकसेवा चालू हुई। मनीऑर्डर भेजने की सुविधा तो सन् 1880 में आरम्भ हुई। और हवाईजहाज़ से डाक भेजे जाने का काम तो इसके बावन साल बाद, यानी 1932 में शुरू हो पाया।

दुनिया का पहला डाक टिकट

डाक टिकट

तुम्हें यह जानकर अचरज होगा कि किसी समय डाक टिकट कागज़ के नहीं धातु के होते थे। उन्हें चिट्ठी पर चिपकाना नहीं, पोस्टऑफिस से खरीदकर चिट्ठी के साथ जमा कराना पड़ता था।

चिपकाने वाले कागज़ के टिकटों की शुरूआत बहुत बाद में हुई। दुनिया का पहला ऐसा टिकट सन् 1840 में इंग्लैण्ड में निकला। इसमें इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया के सिर का चित्र छपा था। यह एक पैनी मूल्य का टिकट था और इसके नीचे इंग्लैण्ड का नाम नहीं छपा था। इंग्लैण्ड के टिकटों पर इसके देश का नाम आज तक नहीं छपता।

अमरीका का पहला डाक टिकट सन् 1847 में निकला था।

भारत का पहला डाक टिकट सन् 1852 में सिंध में निकला था। यह सिन्दूरी रंग का था और इसका मूल्य आधा आना था। इसका उपयोग सिर्फ सिंध के भीतर ही किया जा सकता था। सन् 1866 में सरकारी डाक के टिकट निकल गए थे और सन् 1893 में दतिया राज्य (म.प्र.) ने भी अपना डाक टिकट निकाला। इस पर श्रीगणेश का चित्र छपा था।

आज़ाद भारत का पहला डाक टिकट

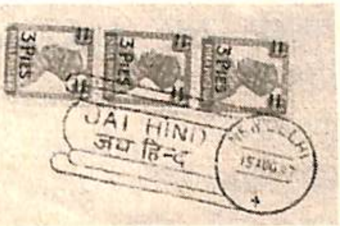

आज़ाद भारत की पहली डाक मोहर

आज़ाद भारत का पहला डाक टिकट

आज़ाद भारत का पहला डाक टिकट 15 अगस्त 1947 को निकला। इस पर तिरंगे झण्डे का चित्र है और ऊपर दाहिने सिरे पर 'जय हिन्द' लिखा है। तुम्हें पता होगा कि जय हिन्द आज़ाद हिन्द फौज का नारा था और यह सुभाषचन्द्र बोस ने दिया था। 15 अगस्त 1947 को ही आज़ाद भारत की पहली डाक मोहर भी जारी की गई। इस पर भी अंग्रेज़ी और हिन्दी में जय हिन्द छपा था।

भारतीयों पर विदेशी डाक टिकट

जिन भारतीय महापुरुषों पर अन्य देशों ने डाक टिकट निकाले हैं उनमें महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मदर टैरेसा व सरदार पटेल के नाम प्रमुख हैं। कपिल देव और सुनील गावस्कर पर भी विदेशों में टिकट निकल चुके हैं। महात्मा गाँधी पर तो सौ देश करीब दो सौ स्मारक टिकट निकाल चुके हैं। ●

पिनकोड क्या होता है? □□□□□□

हमारे देश में नौ रामगढ़ हैं। इसी तरह कोटरा, जावरा इत्यादि भी अनेकों हैं। फिर यदि किसी ने अजनबी भाषा में या खराब लिखावट में पता लिख दिया तो चिट्ठी सही पते पर कैसे पहुँचे? इसके लिए एक तरकीब काम में ली गई है। इसे *पोस्टल इंडेक्स नम्बर* (PIN) कहते हैं। इसके लिए देश को आठ भागों में बाँटा गया है। पिन छह अंकों का होता है। पहला अंक इन आठ भागों में से एक का, दूसरा प्रदेश का, तीसरा पोस्टल डिविज़न का, और बाकी के तीन उस पोस्ट ऑफिस के होते हैं जहाँ से चिट्ठी बाँटी जाएगी। यह व्यवस्था हमारे देश में 15 अगस्त, 1972 से लागू की गई और चिट्ठी को सही पते पर पहुँचाने में बहुत कारगर सिद्ध हुई है। ●

डींग

– लोक बाबू

एक थे बाबू प्यारेलाल जी! नाम से प्यारे, व्यवहार में निराले। कहीं काम-धाम के नाम पर उनकी नानी मरती। घर भी क्या था, एक झोंपड़ी। खपरेलों की छत, मिट्टी की दीवार और टीन-टप्पर का द्वार। बाल बच्चे न थे। कहने को यह झोंपड़ी ही उनकी रह गई थी, और बाबू प्यारेलाल जी का अब भी यह तेवर कि एक मक्खी भी शरीर पर बैठने न देते थे।

पत्नी ने सुबह एक प्याली चाय घण्टे भर पहले उन्हें दी थी। प्यारेलाल जी ने चाय तो पी ली थी, परंतु चाय का कुछ हिस्सा मेज़ पर छलक आया था। चाय की खाली प्याली और मेज़ पर अब कुछ मक्खियाँ भिनभिनाने लगी थीं। मक्खियाँ उड़-उड़कर कभी प्यारेलाल जी पर आ बैठतीं। वे हाथ मलतीं, आँखें दिखातीं और अकड़ कर चलतीं। इससे प्यारेलालजी के स्वाभिमान को ठेस लगी। उन्हें लगा कि मक्खियाँ उनका अपमान कर रही हैं। वह स्टूल पर उकड़ूं बैठ गए। और लगे मारने मक्खियाँ। एक मारी, दो मारी...दस हो गईं। बचे-खुचों की एकता टूट गई। वे छत पर, दीवार पर और बन पड़ा तो झोंपड़ी से ही बाहर भाग खड़ी हुईं।

प्यारेलाल जी ने रण जीत लिया। वे अपने अंदर गर्व महसूस करने लगे। उन्होंने एक कागज़ निकाला। कलम और स्याही ली। कागज़ पर उन्होंने लिखा – दस मक्खियाँ मारीं।

तभी उनके डींगमार दिमाग में एक बात उठी। सोचा- इस कागज़ को किसी और को दिखलाना तो है नहीं। क्यों न दस की जगह सौ लिख दिया जाए। उन्होंने वह कागज़ फाड़ दिया। दूसरे कागज़ पर लिखते-लिखते सौ की जगह हज़ार कर दिया। हज़ार मक्खियाँ मारीं।

कुछ देर तक अपने लिखे को पढ़-पढ़ कर खुश होते रहे। फिर 'मक्खियाँ' शब्द भी उन्हें खलने लगा। इसलिए उन्होंने 'मक्खियाँ' शब्द हटा दिया। साथ ही जोड़ दिया – 'एक बार में।' नीचे अपना नाम लिखा और कर दिए हस्ताक्षर –

मैंने एक बार में हज़ार को मारा।

दस्तखत : बाबू प्यारेलाल

अपने डींगमार

दिमाग की इस महान उपलब्धि को देखते-पढ़ते वे मंत्रमुग्ध बैठे थे। तभी पत्नी ने बगल के कमरे से प्रवेश किया। बाबू प्यारेलाल जी ने झट वह पुर्ज़ा अपनी जेब के हवाले कर दिया। पत्नी झुँझलायी हुई थी। बोली – "चार दिन से बिना हरी सब्ज़ी के खा रहे हैं। देखो, आज बाज़ार का दिन है ये कुछ पैसे हैं। जाकर थोड़ी हरी सब्ज़ी ले लाओ। नहीं तो फिर हफ्ते भर हरी सब्ज़ी का मुँह देखना भी न होगा।"

'फिक्र मत करो मेरी रानी, मैं ये गया और वो आया।"

शेखी मारने वाले उन लोगों से घबराते हैं, जो उनकी हकीकत को जानते हैं। बाबू प्यारेलाल जी सकपकाये। उन्होंने थैला उठाया, पैसे लिए और चले बाज़ार की ओर।

बाज़ार पहुँचकर उन्होंने कुछ सब्ज़ियाँ और ज़रूरी सामान खरीदा। ज़रूरी सामान में उन्होंने अपने लिए थोड़ी – सी मदिरा भी खरीद ली। मदिरा का दाम चुकाते उनकी जेब से कागज़ का पुर्ज़ा नीचे गिर पड़ा जिस पर उनका ध्यान नहीं गया। बाकी सामान उठाकर वह घर की ओर चल पड़े।

वह कागज़ का पुर्ज़ा बाज़ार की गलियों में चक्कर खाता दायें-बायें होने लगा। एक छंटे हुए सिपाही की नज़र उस कागज़ पर पड़ी। कौतुहलवश उसने वह पुर्ज़ा उठाया और पढ़ा। पढ़ने पर उसका कौतुहल और बढ़ा। एक अन्य सिपाही को उसने वह पुर्ज़ा दिखलाया। पहले वाले की तरह ही दूसरा भी छंटा हुआ सिपाही था। दोनों इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस पुर्ज़े को महाराज तक पहुँचाया जाना चाहिए। महाराज की नज़रों में चढ़ने का यह अच्छा मौका है। महाराज हिम्मतशाह के राज्य में एक बार में हज़ारों को मार डालने वाले महाप्रतापी की खोज साधारण घटना नहीं थी। महाराज ज़रूर खुश होंगे। वे दोनों बंदूक से छूटी गोली की तरह राजमहल की ओर दौड़े।

"महाराज ....महाराज!" – उन्होंने राजमहल में पहुँचते ही गुहार मचायी।

"क्या बात है?"– महाराज ने खंखार कर गला साफ करते हुए पूछा – "काहे फड़फड़ा रहे हो?"

बेवकूफ दरबारियों की बेवकूफियों से तंग महाराज दरबार

में ही सो गये थे। नींद उचट जाने से उन्हें क्रोध आ रहा था।

"महाराज की जय हो...... महाराज की जय हो...... !" – पुर्ज़ा पकड़े हुए एक सिपाही ने कहा।

"हाँ, बोलो....बोलो। क्या बात है। क्या रखे हो मुँह में, उगल दो।"

"महाराज, हमारे राज्य में एक बहुत बड़ा पहलवान, महाप्रतापी पुरुष रहता है। अभी-अभी उसकी खबर हाथ लगी है।"

"पहलवान बावन सिंह से तो छोटा ही होगा!......... जो भैंस की पटखनी खाकर गिरा था, तो अपनी टाँग वहीं ज़मीन पर छोड़ कर उठा था।" – महाराज ने चिढ़ते हुए कहा।

"महाराज यह पहलवान साधारण नहीं लगता। एक बार में हज़ार को मार गिराता है।........ उसका दस्तखत किया हुआ एक पुर्ज़ा हमारे हाथ लगा है।"

"एक बार में हज़ार को.......!"– महाराज चकित हुए। उन्होंने पुर्ज़ा देखा और पढ़ा, फिर बोले – "जब इतना बड़ा पहलवान इस राज्य में है, तो उसे सीधे हमारे पास काहे नहीं लाये? निठल्ले बैठे खाते - पगुराते रहते हो। काम का कोई काम नहीं आता। जाओ और जाकर उस पहलवान को बुला लाओ।"

"जो आज्ञा महाराज। अभी लेकर आते हैं।"

दोनों सिपाही वहाँ से सिर झुकाये-झुकाये निकले। फिर और भी कुछ सिपाहियों को साथ लिया। दो-दो की टोली बनाई। घोड़ों पर सवार हुए और अलग-अलग दिशा की ओर चल पड़े।

दोपहर हो चली थी। दो सिपाहियों ने बाबू प्यारेलाल जी की झोंपड़ी ढूँढ ही ली। ये वही दो सिपाही थे, जिन्होंने बाज़ार में पुर्ज़ा पाया था। उनके अचरज का ठिकाना नहीं रहा कि इतने बड़े बाबू प्यारेलाल जी इतनी छोटी-सी जगह में रहते हैं। फिर सोचा – बड़े लोगों की बड़ी बातें। बड़ा होने के लिए घर बड़ा होना ज़रूरी नहीं है।

झोंपड़ी का दरवाज़ा भिड़ा हुआ था। अंदर बाबू प्यारेलाल जी ने दरवाजे से मेज़ को जोड़ रखा था। पीछे कुर्सी पर स्वयं विराजमान थे। बाज़ार से लायी मदिरा आधी कर चुके थे। नशे में मस्त थे। उनके पाँव मेज़ पर से होते

हुए दरवाज़े को छू रहे थे। पत्नी दूसरे कमरे में किसी काम में व्यस्त थी।

राजा की नज़रों में चढ़ने की होड़ में अपनी समझदारी को अपने ही पावों से रौंदते हुए दोनों सिपाही द्वार पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक देने लगे। बाबू प्यारेलाल जी को यह दस्तक अच्छी नहीं लगी। दस्तक दुबारा हुई। अधिक ज़ोर से हुई। साथ ही एक सिपाही ने द्वार को ज़रा-सा धक्का दे डाला।

बाबू प्यारेलाल जी ने सोचा, मुहल्ले के सिरफिरे लड़के होंगे। खेल की कोई चीज़ इधर आ गयी होगी। मगर बदमाश द्वार को धकेल क्यों रहे हैं? उन्हें भारी ग़ुस्सा आ गया। मेज़ के पार फैले एक पैर को उठाकर द्वार पर पटका। टीन का द्वार था ज़ोर से आवाज़ हुई। साथ ही वे ज़ोर से चिल्लाये - "अबे, कौन है? ठहरो तुम्हारा कचूमर निकालता हूं।"

इतना सुनना था कि दोनों सिपाही भयभीत हो भाग खड़े हुए। जान बची लाखों पाये। हांफते-कांपते वे महाराज के पास पहुँचे। सारा हाल सुनाया। महाराज भी सिपाहियों पर बरसे -

"मूर्खों, राज्य का अनाज खाते हो। हाथ पैर नहीं चला पाते हो। दिमाग भी लंगड़ा गया है। इतने बड़े पहलवान के घर पहली बार गये और इस तरह दस्तक दी? पता नहीं वे किस काम में मशगूल रहे हों। शायद दण्ड पेल रहे हों। जाओ, फिर जाओ। बैंड बाजे, मंत्री और रथ के साथ पचास सिपाही और लेकर जाओ। उन्हें बड़ी इज्जत के साथ यहां लाना। उन्हें ज़रा भी नाराज़ न होने देना। वरना अपना अंजाम जान लेना।"

"जो आज्ञा महाराज।"

सिपाही चले गये। पचास और सिपाही भी उनके साथ हो लिए। मंत्री जी भी साथ गये, रथ सहित। बैण्ड बाजे वाले भी साथ हो लिए। इन्हें देखकर लगता था, जैसे कहीं बड़ी बारात लेकर जा रहे हों।

यह काफिला बाबू प्यारेलाल जी के घर के सामने पहुँचा। मगर दो सौ गज दूर ही रुक गया।

इस काफिले को देखकर मोहल्ले वाले चकित और भयभीत थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था, आखिर माजरा क्या है? वे सब घरों में दुबके पड़े रहे। मन में आशंका थी कहीं मोहल्ले पर कोई गाज न गिर जाये।

आगे क्या हुआ? पढ़ो अगले अंक में

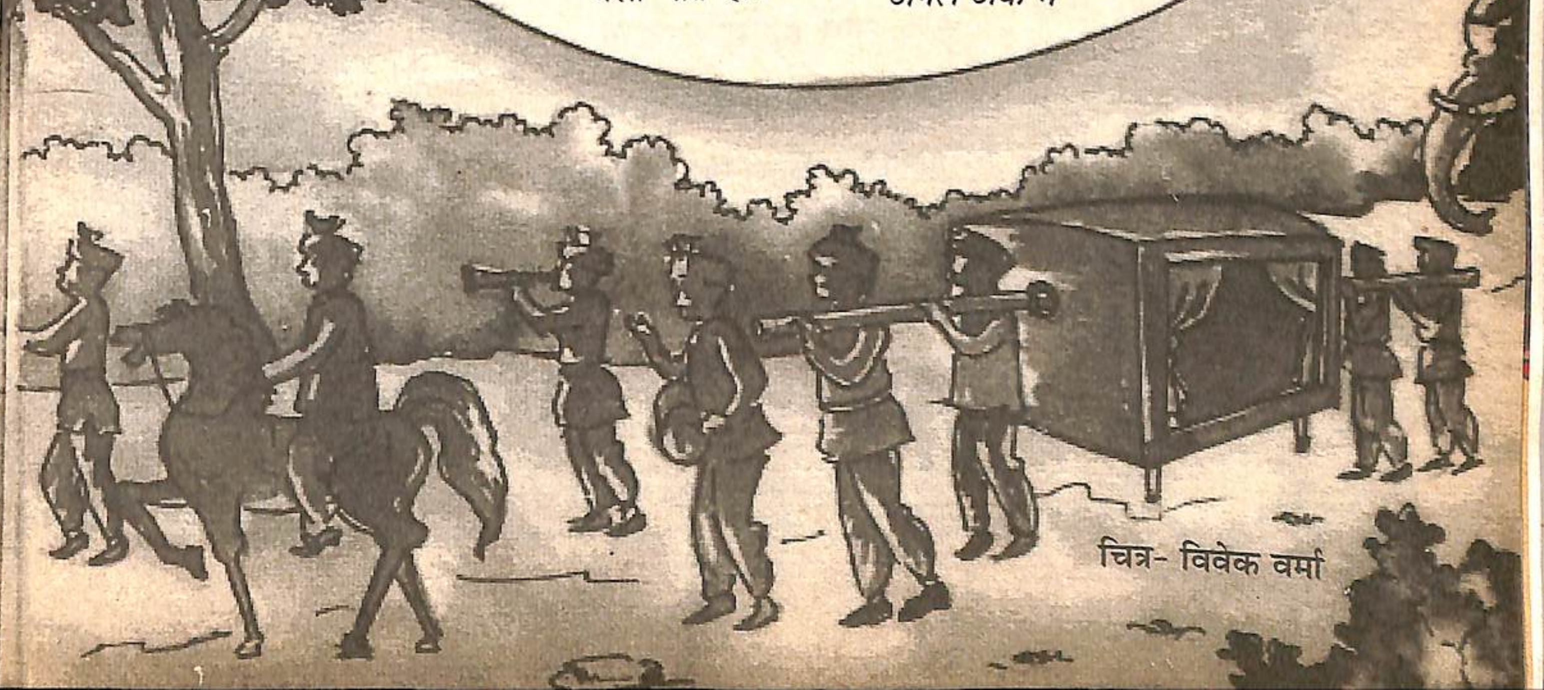

चित्र- विवेक वर्मा

समोसे भाई!

तिरकोतीन समोसे भाई
तुमने सारी चीज़ें खाईं
आलू और खटाई खाई
खाया सारा मिर्च मसाला
मुँह तो छोटा-सा है लेकिन
तेल कड़ाही भर पी डाला
इतना सारा खाया फिर भी
चाय माँगते लाज न आई!!
तिरकोतीन समोसेभाई
गर्म-गर्म खाया है सब कुछ
फिर भी नर्म तुम्हारी काया
सोच-सोच हैरान बहुत हूँ
समझ न पाया तेरी माया
अल्लम-गल्लम पचा लिया सब
खाई तुमने कौन दवाई
तिरकोतीन समोसे भाई!!

- शिवचरण चौहान

चित्र- सुनील सिंह

इंटरनेट क्या है?

डॉ. सुशील जोशी

इण्टरनेट का नाम तुम सबने सुना होगा। जगह-जगह ऐसी दूकानें भी देखी होंगी जहाँ इण्टरनेट का बोर्ड लगा होता है। इण्टरनेट पर लोगों के गपशप या चैटिंग की बात भी तुमने सुनी होगी, लेकिन क्या तुम जानते हो कि इण्टरनेट होता क्या है? अगर भारत का कोई बच्चा अफ्रीका के किसी बच्चे से नेट पर बात कर सकता है या ऑस्ट्रेलिया के कम्प्यूटर से जुड़े किसी पुस्तकालय में रखी किताब पढ़ सकता है, तो क्या इनके कम्प्यूटर किसी बहुत ज़्यादा लम्बे तार से आपस में जुड़े हुए हैं? आओ देखें कि इण्टरनेट क्या होता है और कैसे काम करता है।

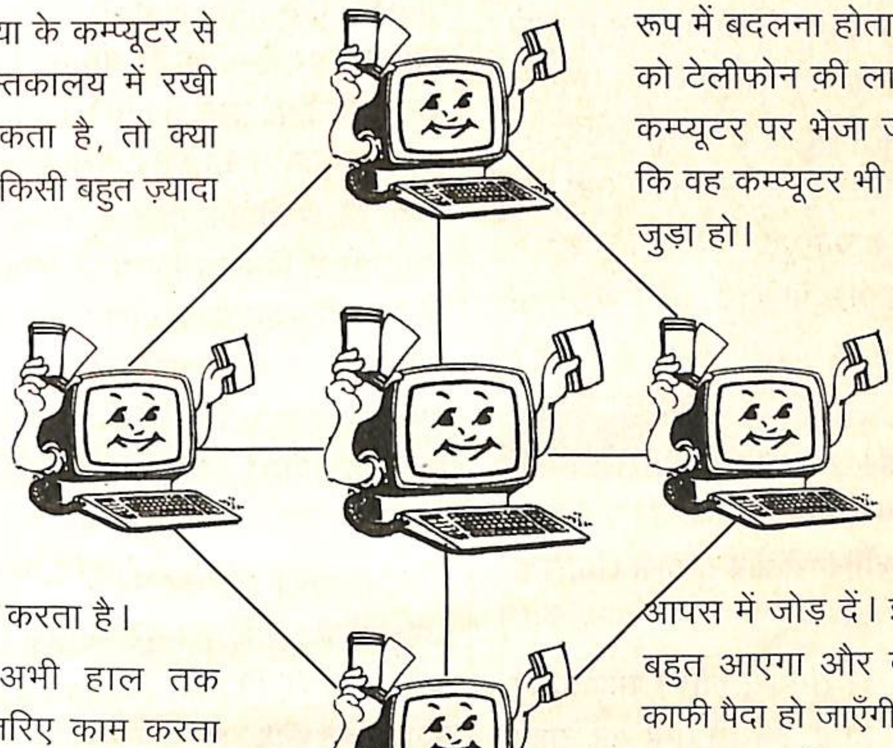

इंटरनेट अभी हाल तक टेलीफोन के ज़रिए काम करता था। तुम अपने कम्प्यूटर में मोडेम नाम का एक यंत्र लगाते हो, उसे फोन से जोड़ते हो और इंटरनेट से कनेक्शन बना लेते हो। अब अपने कम्प्यूटर पर मौजूद किसी खोजी सॉफ्टवेयर की मदद से मनचाही जानकारी खोज सकते हो।

सवाल यह उठता है कि तुम्हारे कम्प्यूटर पर वह सारी जानकारी आ कहाँ से जाती है? ऐसा बताते हैं कि दुनिया भर में बहुत सारे कम्प्यूटरों पर रखी जानकारी को ही हम इंटरनेट सुविधा के माध्यम से अपने कम्प्यूटर पर देख पाते हैं। तो हम घूम-फिरकर वहीं आ गए कि इंटरनेट क्या होता है?

कई साल पहले कुछ वैज्ञानिकों ने देखा कि एक कम्प्यूटर की जानकारी को दूसरे पर एक तार के ज़रिए भेजा जा सकता है। इसके लिए पहले उस जानकारी को टेलीफोन संकेत के रूप में बदलना होता है। इस जानकारी को टेलीफोन की लाइन से किसी अन्य कम्प्यूटर पर भेजा जा सकता है बशर्ते कि वह कम्प्यूटर भी टेलीफोन लाइन से जुड़ा हो।

इस सुविधा को चलाने के लिए ऐसा तो हो नहीं सकता कि घर-घर के कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ दें। इसमें एक तो खर्चा बहुत आएगा और दूसरे समस्याएँ भी काफी पैदा हो जाएँगी। जैसे मेरे कम्प्यूटर पर बहुत सारी जानकारी रखी है जो मैं सबको दिखाना नहीं चाहता। मगर यदि मेरा कम्प्यूटर टेलीफोन से जुड़ जाए तो तुम सब कुछ देख लोगे। इसलिए ऐसा किया गया है कि दुनिया भर में कुछ कम्प्यूटर रखे गए हैं और उन्हें टेलीफोन लाइन से जोड़ दिया गया है। इन्हें **सर्वर** कहते हैं। यदि मैं कोई जानकारी सबको देखने के लिए रखना चाहूँ तो इन सर्वर पर रखता हूँ। इसके लिए मुझे सर्वर के संचालक से इजाज़त लेनी होती है। सर्वर के संचालक मतलब इंटरनेट

सेवा प्रदाता। वे मुझसे कुछ पैसा भी ले सकते हैं। इजाज़त देने के साथ ही सर्वर के संचालक मेरी जानकारी को उनके कम्प्यूटर के एक निर्धारित हिस्से में रखते हैं। इस हिस्से का एक पता होता है। यह मेरी वेबसाइट कहलाती है। इस **वेबसाइट** पर मैं मनचाही जानकारी, सूचनाएँ, चित्र वगैरह रख सकता हूँ। इस वेब साइट पर कोई भी जानकारी रखने के लिए एक **पासवर्ड** ज़रूरी होता है और यह पासवर्ड सिर्फ मुझे पता होता है।

अब मान लो तुम किसी वेबसाइट पर रखी जानकारी देखना चाहते हो। सबसे पहले तुम्हें अपने कम्प्यूटर को फोन लाइन के ज़रिए किसी सर्वर से जोड़ना होगा। इसके लिए भी इजाज़त लगती है। सर्वर के संचालक तुमसे कुछ पैसा लेकर तुम्हें एक पासवर्ड देंगे। स्वयं के कम्प्यूटर को फोन लाइन से जोड़कर अपना नाम और पासवर्ड टाइप करोगे तो तुम उस सर्वर से जुड़ जाओगे। सर्वर से जुड़े मतलब इंटरनेट से जुड़ गए। इंटरनेट का मतलब ही है सर्वर्स का जाल। तुम जिस सर्वर से जुड़ते हो वह दुनिया के तमाम सर्वर्स से जुड़ा है। उन सारे सर्वर्स पर उपलब्ध जानकारी अब तुम्हारी उँगलियों पर है।

सर्वर से जुड़ने पर तुम्हारा खोजी सॉफ्टवेयर एक फॉर्म प्रस्तुत करता है, जिसमें तुम्हें यह टाइप करना होता है कि तुम किस वेबसाइट से जुड़ना चाहते हो। वेबसाइट का पता टाइप करते ही खोजी सॉफ्टवेयर दुनिया के सारे सर्वर्स पर उस पते की तलाश में जुट जाता है। जैसे ही वह पता मिलता है उसकी जानकारी तुम्हारे सामने आ जाती है। किसी वेबसाइट को तुम सिर्फ देख सकते हो या बहुत हुआ तो उससे मनचाही जानकारी की नकल अपने कम्प्यूटर पर उतार सकते हो। तुम उस वेबसाइट में कोई परिवर्तन नहीं कर सकते क्योंकि तुम्हारे पास उसका पासवर्ड नहीं है।

मेरा अंदाज़ है कि फिलहाल दुनिया भर में कोई 20-30 लाख वेबसाइट्स होंगी। इनमें से प्रत्येक का एक अनूठा पता होता है।

आजकल इंटरनेट पर आम तौर पर लोग वेब साइट का पता टाइप नहीं करते। अपने खोजी सॉफ्टवेयर पर वे उस विषय का नाम टाइप करते हैं जिसके बारे में जानकारी चाहते हैं। इसे **की-वर्ड** खोज कहते हैं। तुम चाहो, तो उस विषय से सम्बंधित कुछ प्रमुख शब्द भी टाइप कर सकते हो। इंटरनेट पर ऐसे खोजी प्रोग्राम हैं जो दिन-रात सभी सर्वर्स पर रखी जानकारी को पढ़कर उसका वर्गीकरण करते रहते हैं। जैसे ही तुम विषय टाइप करते हो, ये प्रोग्राम पहले से तैयार वर्गीकरण में से बता देते हैं कि उस विषय से सम्बंधित जानकारी कहाँ-कहाँ रखी है। इन प्रोग्राम्स को **सर्च इंजिन** कहते हैं। इसके अलावा, यदि वह विषय पहले से सर्च इंजिन के ध्यान में न आया हो, तो शब्द टाइप करने के बाद भी वह दुनिया भर के सर्वर्स पर उस जानकारी की तलाश शुरू कर देता है।

आजकल इंटरनेट पर बहुत अधिक जानकारी उपलब्ध है। कई पूरी-पूरी लायब्रेरी सर्वर्स पर हैं। पूरी की पूरी किताबें, फ़िल्में, चित्र, गीत, ख़बरें वगैरह इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। अश्लील सामग्री भी है। वैसे अभी इंटरनेट पर कोई सेंसरशिप नहीं है। शायद इसका कोई तरीका भी नहीं है। जानकारी के इस नए स्रोत का फायदा यह है कि कोई भी इसका उपयोग कर सकता है। दूसरा फायदा यह है कि कोई भी अपनी मनपसंद जानकारी इस पर उपलब्ध करा सकता है। मगर नुकसान यह है कि हानिकारक जानकारी भी इस पर रखी जा सकती है। अब सचमुच हमें तय यह करना है कि जानकारी के इस जिन्न को कैसे सँभालें। ●

ई-मेल

पहले हमें विदेश में रह रहे किसी मित्र या रिश्तेदार को पत्र भेजना होता तो उसे पहुँचने में कई-कई दिन लग जाते थे। अब इण्टरनेट के माध्यम से यह काम पलक झपकाते हो जाता है। इस प्रकार की डाक को इलेक्ट्रॉनिक मेल या ई मेल कहते हैं। ई मेल के लिए कम्प्यूटर इस्तेमाल करने वाले हर व्यक्ति का एक अलग पता हो सकता है। पत्र पाने के लिए उसे कम्प्यूटर खोलकर बैठना भी ज़रूरी नहीं है। उसके लिए जो भी पत्र आएँगे उसके मेल बॉक्स में जमा होते जाएँगे। जब भी वह मेल बॉक्स खोलेगा, एक के बाद एक सारे पत्र/संदेश पढ़ लेगा और चाहेगा तो जवाब भी दे देगा।

कम्प्यूटर उपयोग करनेवाले हज़ारों कि.मी. दूर बैठे एक-दूसरे से गपशप भी कर सकते हैं। यदि उनके कम्प्यूटर के साथ कैमरे भी जुड़े हों तो वे एक-दूसरे को देख भी सकते हैं।

लगता है न चमत्कार जैसा!

ई-बिजनेस

इण्टरनेट ने व्यापार के तरीकों में भी जबर्दस्त परिवर्तन ला दिया है। अब व्यापारी अपनी वस्तु का चित्र नैट पर दिखा सकता है और उसके गुण, काम करने के तरीके, कीमत वगैरह के बारे में भी बता सकता है। न सिर्फ यह बल्कि खरीदनेवाला नेट पर ही बता सकता है कि वह अमुक वस्तु खरीदना चाहता है। वह नेट पर ही अपने बैंक से कह सकता है कि अमुक व्यक्ति को मेरे खाते से इतना भुगतान कर दिया जाए। बस, वस्तु घर बैठे आप तक पहुँच जाएगी।

फूल और सब्ज़ी से लेकर हवाईजहाज़ तक इस तरीके से बेचे-खरीदे जा रहे हैं।

क्या कहोगे इसे? क्या किसी ने कभी सोचा था कि एक दिन ऐसा भी हो पाएगा?

ज्ञान सबके लिए

मनुष्य का बहुत सारा ज्ञान इसलिए नष्ट हो गया क्योंकि एक पीढ़ी उसे दूसरी पीढ़ी को नहीं दे पाई।

इण्टरनेट आने के बाद दुनिया का बहुत सारा ज्ञान सभी लोगों के लिए सुलभ हो गया है। इण्टरनेट पर हज़ारों-लाखों वेबसाइट हैं। किसी पर संगीत है, किसी पर फिल्में, किसी पर अखबार और किसी पर संग्रहालय में रखे प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्र। बेशक! यह सारी सामग्री मुफ्त में नहीं मिलती। कुछ मुफ्त में मिलती है, उसे आप उतार भी सकते हैं, कुछ मुफ्त में देख तो सकते हैं पर उतार नहीं सकते और शेष को देखने या उतारने के लिए पैसे देने पड़ते हैं।

लेकिन यह सामग्री इतनी ज़्यादा है कि घर बैठे किसी विषय पर इतनी सामग्री मिल जाना ज्ञान का खज़ाना मिल जाने से कम नहीं।

अब क्या छिपेगा?

इण्टरनेट ने सारी दुनिया को एक गाँव जैसा बना दिया है। संसार के किसी भी कोने में भूकंप आए, बाढ़ आए या तूफ़ान आए - पल भर में सारी दुनिया को खबर हो जाती है। किसी ज़माने में सरकारें सूचनाओं के आने-जाने पर अपनी सुविधा के अनुसार पाबन्दी लगा सकती थीं। अब कोई सरकार ऐसा नहीं कर सकती। युद्ध और सैनिक तैयारी की बातें भी सबको मालूम पड़ जाती हैं। कम्प्यूटर इस्तेमाल करने वाली दुनिया जैसे काँच की दीवारों से बने मकान में रहती है जहाँ किसी से कोई बात नहीं छिपती।

और यह सब होता है उन संचार उपग्रहों के माध्यम से जो समय-समय पर छोड़े जाते हैं। अगले किसी अंक में हम इनके बारे में विस्तार से बताने की कोशिश करेंगे।

तुम भी बनाओ

गाँधी टोपी

गाँधी टोपी बनाने के लिए तुम्हें सिर्फ दो परत वाला एक पुराना अख़बार चाहिए होगा।

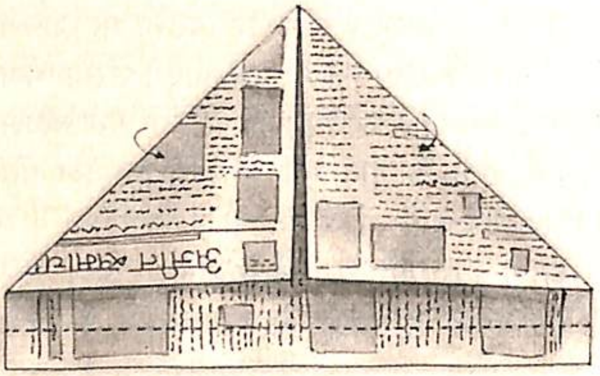

1. दो परतवाले अखबार को आड़ा रखकर (ध्यान रहे कि अखबार का जुड़ा हुआ हिस्सा ऊपर की ओर हो), दोनों ओर से बीच की लाइन तक आधा मोड़ दो।

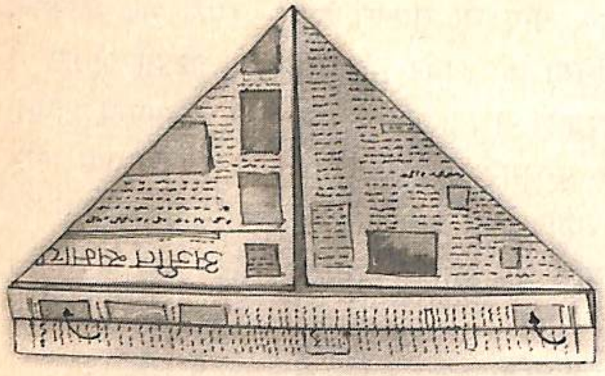

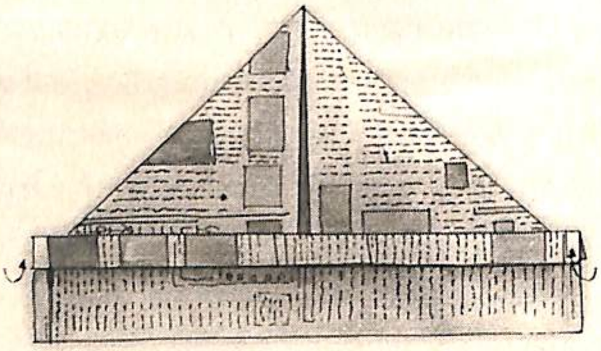

2. राकेट जैसी आकृति बनने के बाद अखबार के निचले खुले दो हिस्सों में से ऊपर वाले हिस्से को आधा ऐसे मोड़ो कि वह राकेट की किनार तक पहुँच जाए। उसी मुड़े हुए हिस्से को उतना ही एक बार और मोड़ लेने पर वह हिस्सा राकेट के ऊपर चढ़ जाएगा।

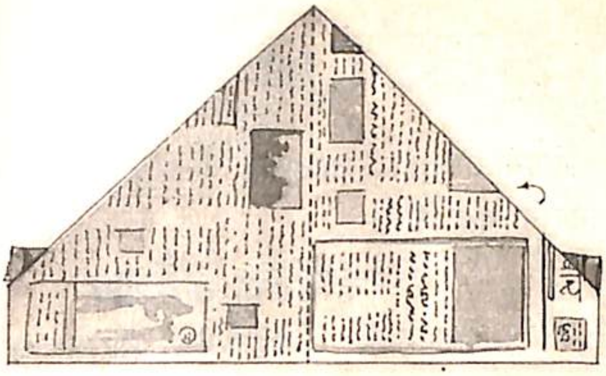

3. अब अखबार पलट लो।

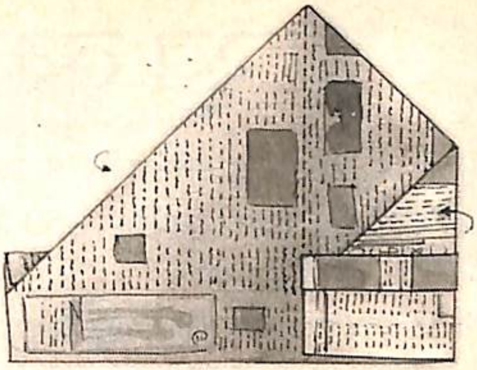

4. अब राकेट के दोनों छोरो को राकेट की बीच वाली लाइन तक मोड़ लो।

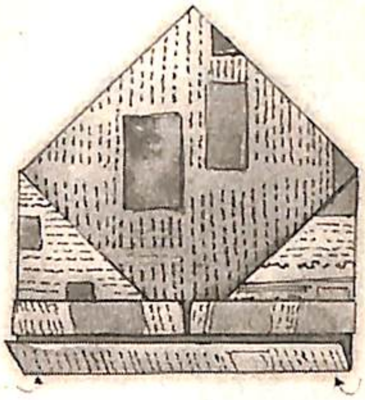

5. छोर के नीचे बचे अखबार के हिस्से को इतना मोड़ो की वह मुड़े हुए हिस्से के ऊपर तक चला जाए।

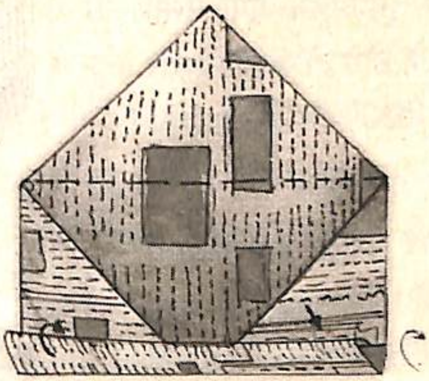

6. इस ऊपर चले गए हिस्से को मोड़कर टोपी के छोर वाले निचले हिस्से में फँसा दो।

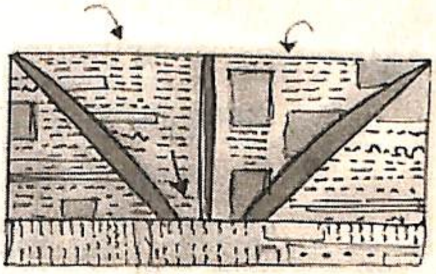

7. फिर ऊपर की ओर बने त्रिकोण को आधा मोड़ो ताकि वह टोपी के निचले हिस्से में फँस जाए।

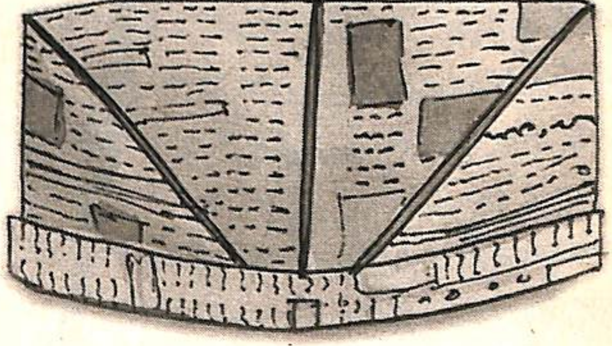

8. हो गई गाँधी टोपी तैयार।

तुम इसे पहनकर और हाथ में एक लकड़ी लेकर गाँधीजी बन सकते हो!

चित्र- विवेक वर्मा

देख तमाशा हड्डी का

जब तुम पैदा हुए थे, तुम्हारे शरीर में लगभग 270 हड्डियाँ थीं, लेकिन अब सिर्फ 250 हैं। तो बीस कहाँ गईं? कहीं गिर गईं? नहीं, गिरी नहीं। हुआ यह कि कुछ हड्डियाँ आपस में जुड़कर एक हड्डी बन गईं। जैसे चेहरे की हड्डियाँ।

जब तुम अपने पापा-मम्मी की उम्र के होगे तो तुम्हारे शरीर में सिर्फ 200 हड्डियाँ बचेंगी।

पसली

हमारे हृदय और फेफड़ों को सुरक्षित रखनेवाली पसलियाँ सख्त मालूम होती हैं, पर हैं नहीं। पसलियों का ढाँचा रीढ़ की हड्डी से ढीले-ढाले तरीके से जुड़ा होता है, ताकि वह आगे की तरफ फैल सके। ऐसा नहीं होता तो हम साँस भी न ले पाते।

हल्की-फुल्की

तुम्हारी हड्डियाँ मज़बूत हैं, पर हैं बहुत हल्की। सच बात तो यह है कि जाँघ की हड्डी जो सबसे बड़ी हड्डी है, पोली होती है। हड्डियों के भीतर हवा भरी होती है - स्पंज की तरह। हड्डियों का भार शरीर के कुल वज़न का सिर्फ पाँचवां भाग होता है। सोचो, अगर हड्डियाँ ठोस होतीं तो इनका वज़न ढोते-ढोते हम कितना थक जाते!

हड्डियों का शीर्ष

मस्तिष्क की रक्षा करनेवाली खोपड़ी सात हड्डियों से मिलकर बनी होती है। ये हड्डियाँ आपस में ऐसे जुड़ी रहती हैं जैसे सटे हुए गुटके।

छुटकू-सी हड्डी

तुम्हारे शरीर की सबसे छोटी हड्डी कौन-सी है? यह तुम्हारे कान में है।

देखा? लगती है न छुटकू?

परमवीर हाथ!

हाथ इतने महत्वपूर्ण हैं कि दोनों हाथों में ही शरीर की एक चौथाई हड्डियाँ होती हैं।

हड्डी का तेल

हर बार जब तुम चलते हो हड्डियाँ हरकत करती हैं। तो ये घिसती-टूटती क्यों नहीं? इसलिए कि इनके सिरों पर एक चिकनी झिल्ली चढ़ी होती है और उन पर चिकनाई की भी एक परत होती है जिसे हम चाहें तो हड्डी का तेल भी कह सकते हैं। ●

हुआ यूँ कि...

हैंस एण्डरसन

हैंस एण्डरसन बच्चों के लिए कहानी लिखने वाले एक प्रसिद्ध लेखक हैं। दुनिया की बहुत सारी भाषाओं में उनकी कहानियों के अनुवाद हुए हैं। अनेक देशों के बच्चे आज भी एण्डरसन की लिखी कहानियाँ बहुत चाव से पढ़-सुन रहे हैं।

एण्डरसन का पूरा नाम हैंस क्रिश्चियन एण्डरसन था। उनका जन्म 2 अप्रैल 1805 को डेनमार्क के ऑडेंसी नामक नगर में एक छोटे से गरीब परिवार में हुआ था। उनके पिता जूते बनाने का काम करते थे और माँ कपड़े धोने का। उन्होंने अपनी उस बचपन की दुनिया के बारे में लिखा था- 'जूते बनाने की बैंच, बिस्तरों और मेरे सोने की बैंच से ही वह कमरा भर जाता। उसकी दीवारें सुन्दर चित्रों से सजी हुई थीं। अलमारियों में सुन्दर प्याले, गिलास और सजावट का सामान रखा रहता था। जूते बनाने की बैंच के पास एक खिड़की थी जिसकी बगल में सुन्दर कहानियों और गीतों की किताबों से भरी एक अलमारी रखी थी। दरवाज़े पर बने चित्रों को देखकर मुझे ऐसा लगता मानो मैं किसी आर्ट गैलेरी में हूँ।'

लेकिन जब एण्डरसन ग्यारह वर्ष के थे, उनके पिता की मृत्यु हो गई। तीन वर्ष बाद माँ ने दूसरी शादी कर ली। एण्डरसन अभिनेता बनने कोपनहेगन चले गए, लेकिन अभिनेता तो नहीं बन सके, बच्चों के लिए रोचक कहानियों के लेखक के रूप में ज़रूर प्रसिद्ध हो गए। उनकी कहानियाँ बच्चों और बड़ों द्वारा इतनी पसन्द की गईं कि पिछले डेढ़ सौ सालों से वे लगातार छप रही हैं और पढ़ी जा रही हैं।

एण्डरसन की कहानियों में परियाँ भी हैं, कल्पनालोक भी, बात करनेवाले पशु-पक्षी और उड़नेवाला सन्दूक भी, पर सबसे खास बात यह है कि वे ज़िन्दगी की सच्चाई को कभी नहीं छोड़ते। इसलिए हर पढ़ने वाले को ऐसा लगता है कि एण्डरसन की कहानी उसके आसपास की दुनिया की ही है।

राजा की नई पोशाक एण्डरसन की मशहूर कहानी है जिसमें कुछ बुनकर राजा को एक ऐसी पोशाक बनाकर देने के नाम पर लूटते हैं, जिसे सिर्फ अक्लमंद लोग देख सकें। वे झूठमूठ की पोशाक बनाते हैं जिसे पहनकर राजा जुलूस के साथ बाज़ार में निकलता है। सब राजा की नई पोशाक की झूठी तारीफ कर रहे होते हैं, पर एक बच्चा बगैर डरे बोल देता है - *राजा तो नंगा है।*

बालकथाओं के इस महान लेखक को सत्तर साल की उम्र में कैंसर हो गया और 4 अगस्त 1875 को उनकी मृत्यु हो गई।

इस साल सारी दुनिया में एण्डरसन की दो सौवीं वर्षगाँठ मनाई जा रही है। इस अवसर पर हम उनकी दिल को छू लेनेवाली एक कहानी **माचिसवाली बच्ची** छाप रहे हैं।

माचिसवाली बच्ची

✍ हेंस एण्डरसन

अनुवाद - हरिकृष्ण देवसरे

भीषण सर्दी थी। बर्फ पड़ी थी और एकदम अँधेरा हो गया था। शाम हो चली थी। वह साल की आखिरी शाम थी। उस धुँधलके और सर्दी में एक छोटी बच्ची नंगे पैर और नंगे सिर सड़क पर चली जा रही थी। जब वह अपने घर से निकली थी तो उसने चप्पलें पहनी थीं। लेकिन उनकी क्या ज़रूरत थी? वे चप्पलें बहुत ही बड़ी थीं। वे इतनी बड़ी थीं कि अभी तक उसकी माँ उन्हें पहनती थी। जब सड़क पर से लड़की की बगल से दो गाड़ियाँ तेज़ी से गुज़र रही थीं, तब लड़की फिसलकर गिर गई थी और चप्पलें गुम हो गईं थीं। उसने सोचा कि जब उसके बच्चे होंगे तो वह उन्हें पालने की तरह इस्तेमाल कर लेगी। इसलिए वह लड़की अब् नंगे पैर चली जा रही थी। उसके लाल पैर ठण्ड से नीले पड़ गए थे. एक पुराने चोगे में उसने बहुत-

मेरी भी आभा है इसमें

नए गगन में नया सूर्य जो
चमक रहा है
यह विशाल भूखण्ड आज जो
दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें

भीनी-भीनी खुशबू वाले
रंग-बिरंगे
यह जो इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था

पकी सुनहली फसलों से जो
अबकी यह खलिहान भर गया

मेरी रग-रग के शोणित की बूँदें
इसमें मुसकाती हैं

नए गगन में नया सूर्य जो
चमक रहा है
यह विशाल भूखण्ड आज जो
दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें

-नागार्जुन

गाँधीजी की कितनी अलग-अलग चीज़ों में रुचि थी, यह देखकर ही ताज्जुब होता है। और जब वो किसी काम में रुचि लेते थे तो वो उसे पूरी निष्ठा से करते थे। वो कभी भी किसी काम को सतही रूप से नहीं करते थे। खासकर वो ज़िंदगी की छोटी-छोटी चीज़ों को पूरी लगन से करते थे। यह उनकी गहरी इंसानियत का द्योतक था। यह उनके चरित्र का आधार था।

-जवाहरलाल नेहरू

चित्र - आर.के. लक्ष्मण
निकी थॉमस

सी माचिसें रखी थीं और एक माचिस उसके हाथ में थी। किसी ने अभी तक उससे एक माचिस भी नहीं खरीदी थी और उसे एक पैसा तक नहीं मिला था।

वह भूख और ठण्ड से काँपती हुई दुखों की मूर्ति बनी हुई, घिसटती चली जा रही थी- बेचारी नन्ही बच्ची! बर्फ के कतरे उसके कंधों पर बिखरे सुन्दर लम्बे, घुँघराले उजले बालों पर पड़ रहे थे। लेकिन वह उनके बारे में नहीं सोच रही थी। सभी खिड़कियों में रोशनी चमक रही थी और भुनी हुई बतखों की खुशबू आ रही थी क्योंकि आज नए साल की पहली शाम थी। हाँ, उसे यह ख्याल ज़रूर आया।

दो घरों के बीच बने एक कोने में, जिनमें एक घर दूसरे से आगे निकला हुआ था, वह सिकुड़कर बैठ गई। उसने अपने नन्हे पैर समेट लिए थे लेकिन उसे अभी भी ठण्ड लग रही थी। उसमें घर जाने की हिम्मत नहीं थी क्योंकि उसने एक भी माचिस बेचकर एक भी पैसा नहीं कमाया था। उसे घर जाने पर अपने पिता से बहुत मार पड़ती और इसके अलावा उसके घर में भी बहुत ठण्ड थी। वहाँ छत से हवा सीटियाँ बजाती हुई भीतर आ जाती थीं जबकि बड़े छेदों को उन्होंने पुआल और बोरों से बन्द कर रखा था।

उसके नन्हे हाथ ठण्ड में करीब-करीब जम ही गए थे। ओह, एक माचिस से उसे मदद मिलेगी। अगर वह बण्डल में से एक माचिस निकाल ले और उसे दीवार पर रगड़े तो वह अपने हाथ गर्म कर सकती है। उसने एक माचिस बाहर निकाली। सर्रर! वह एक आवाज़ के साथ जल गई। इसकी लौ एक छोटी मोमबत्ती की तरह गर्म और चमकदार थी। उसने अपने हाथ उसके ऊपर रख लिये। यह बहुत सुन्दर-सी नन्ही रोशनी थी। उस बच्ची को ऐसा लग रहा था कि वह चमकते हुए पीतल के पैरों और ढक्कन वाली एक बड़ी अँगीठी के सामने बैठी है। आग कैसे जल रही थी! वह कितनी आरामदायक थी। लेकिन छोटी-सी लौ खत्म हो गई। अँगीठी गायब हो गई और उसके हाथ में बुझी हुई माचिस रह गई।

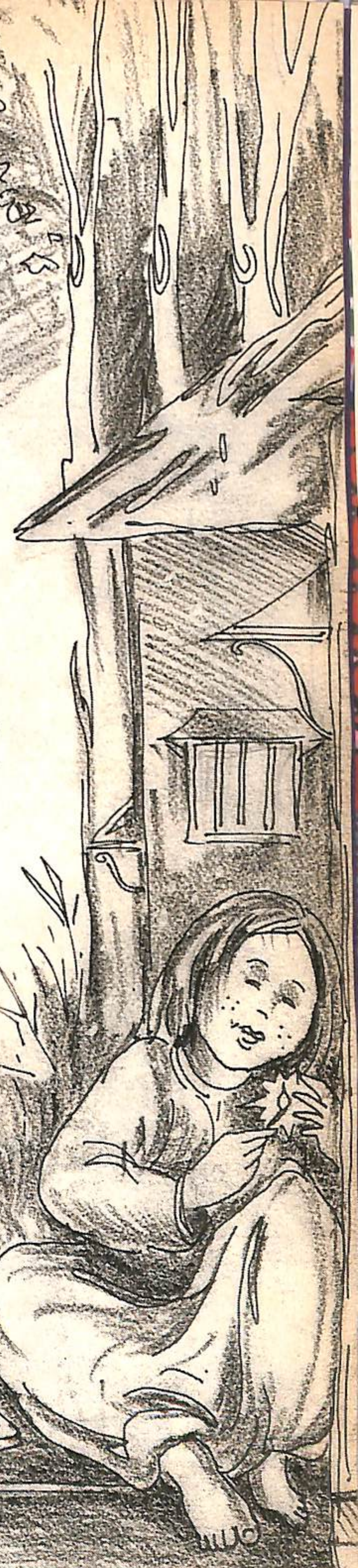

उसने एक दूसरी माचिस दीवार से रगड़ जलाई। जब वह जली और दीवार पर रोशनी पड़ी तो दीवार एक पतले परदे जैसी पारदर्शी हो गई और वह कमरे

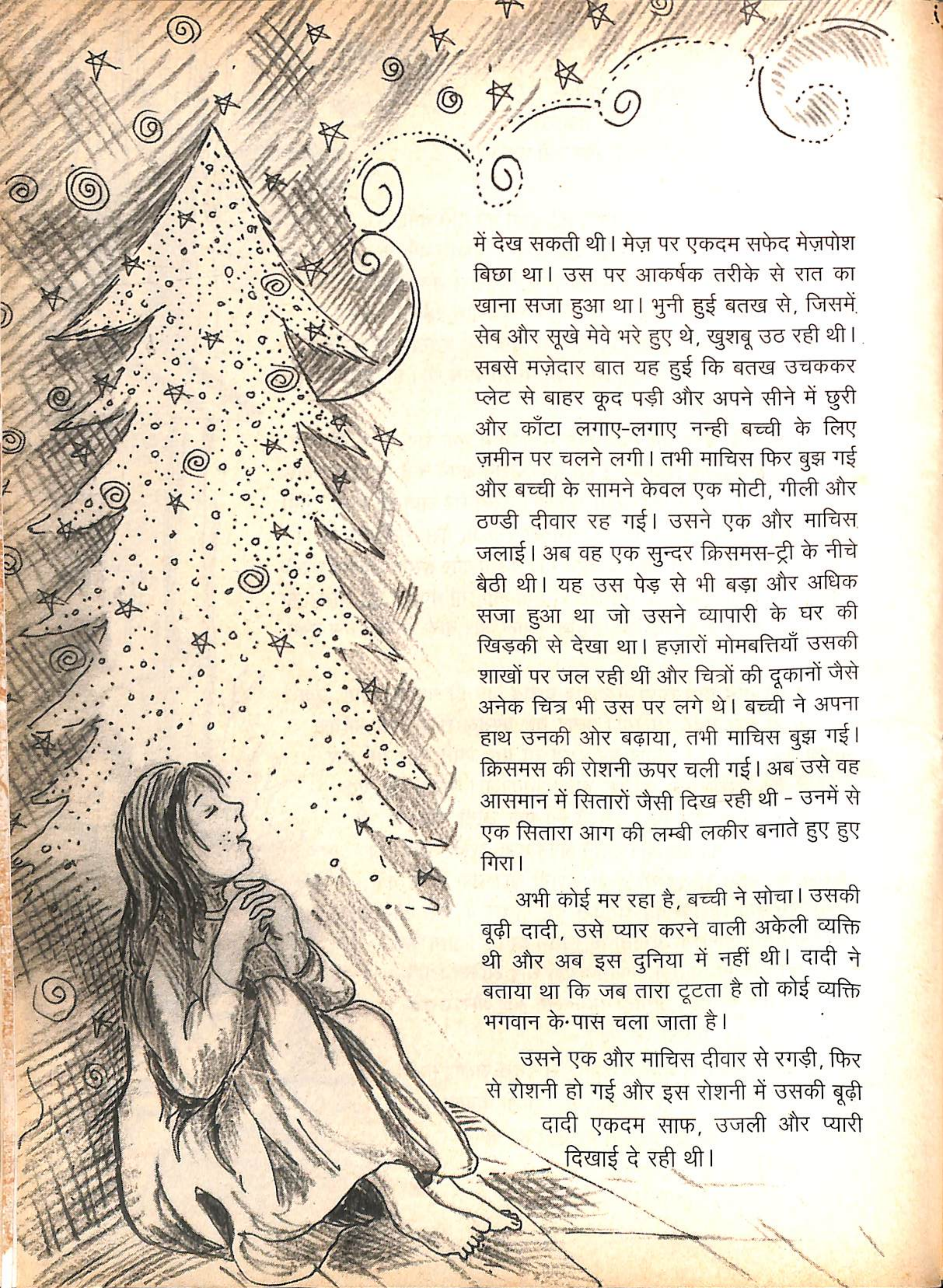

में देख सकती थी। मेज़ पर एकदम सफेद मेज़पोश बिछा था। उस पर आकर्षक तरीके से रात का खाना सजा हुआ था। भुनी हुई बतख से, जिसमें सेब और सूखे मेवे भरे हुए थे, खुशबू उठ रही थी। सबसे मज़ेदार बात यह हुई कि बतख उचककर प्लेट से बाहर कूद पड़ी और अपने सीने में छुरी और काँटा लगाए-लगाए नन्ही बच्ची के लिए ज़मीन पर चलने लगी। तभी माचिस फिर बुझ गई और बच्ची के सामने केवल एक मोटी, गीली और ठण्डी दीवार रह गई। उसने एक और माचिस जलाई। अब वह एक सुन्दर क्रिसमस-ट्री के नीचे बैठी थी। यह उस पेड़ से भी बड़ा और अधिक सजा हुआ था जो उसने व्यापारी के घर की खिड़की से देखा था। हज़ारों मोमबत्तियाँ उसकी शाखों पर जल रही थीं और चित्रों की दूकानों जैसे अनेक चित्र भी उस पर लगे थे। बच्ची ने अपना हाथ उनकी ओर बढ़ाया, तभी माचिस बुझ गई। क्रिसमस की रोशनी ऊपर चली गई। अब उसे वह आसमान में सितारों जैसी दिख रही थी - उनमें से एक सितारा आग की लम्बी लकीर बनाते हुए हुए गिरा।

अभी कोई मर रहा है, बच्ची ने सोचा। उसकी बूढ़ी दादी, उसे प्यार करने वाली अकेली व्यक्ति थी और अब इस दुनिया में नहीं थी। दादी ने बताया था कि जब तारा टूटता है तो कोई व्यक्ति भगवान के पास चला जाता है।

उसने एक और माचिस दीवार से रगड़ी, फिर से रोशनी हो गई और इस रोशनी में उसकी बूढ़ी दादी एकदम साफ, उजली और प्यारी दिखाई दे रही थी।

दादी!, बच्ची चिल्लाई, ओह मुझे अपने साथ ले चलो। मुझे मालूम है कि माचिस बुझते ही तुम चली जाओगी। तुम भी गर्म आग, गर्म खाने और बड़े सुन्दर क्रिसमस-ट्री की तरह ही गायब हो जाओगी।

और उसने जल्दी-जल्दी माचिसों का पूरा बण्डल घिसकर जला दिया क्योंकि वह अपनी दादी को रोके रखना चाहती थी। और माचिसें इतनी रोशनी दे रही थीं कि दिन से भी ज़्यादा रोशनी हो रही थी। दादी इतनी बड़ी या इतनी प्यारी कभी नहीं दिखाई दी थी। उन्होंने बच्ची को अपनी बाँहों में उठा लिया और दोनों धरती के ऊपर रोशनी और आनन्द में उड़ चलीं, बहुत-बहुत ऊपर। यहाँ न तो ठण्ड थी, न भूख, न सेवा, वे अब भगवान की साथी थीं।

लेकिन साल के आखिरी दिन उस कोने में दीवार से टिकी हुई लाल गालों और मुस्कुराते चेहरे वाली नन्ही गरीब बच्ची ठण्ड से अकड़कर मरी हुई बैठी थी। नए साल के सूरज की पहली किरणें उसके छोटे-से शरीर पर पड़ीं। बच्ची वहीं अकड़ी हुई और ठण्डी बैठी हुई थी। उसके पास माचिसें थीं जिनमें से एक बण्डल उसने जला दिया था। वह अपने आपको गर्मी देना चाहती थी, लोगों ने कहा।

लोगों को क्या मालूम था कि उसने कितनी सुन्दर-सुन्दर चीज़ें देखी थीं और नए साल के दिन वह अपनी दादी के साथ किस सुन्दर जगह पर चली गई थी! ●

चित्र- उदय खरे

चित्र-पहेली

संकेत बाएँ से दाएँ

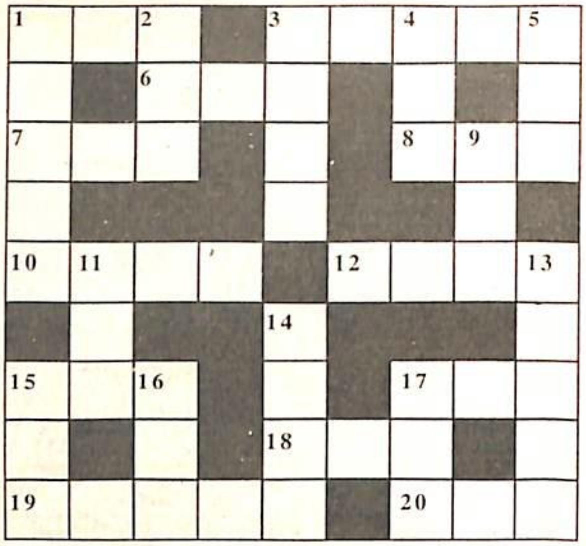

1

3

6

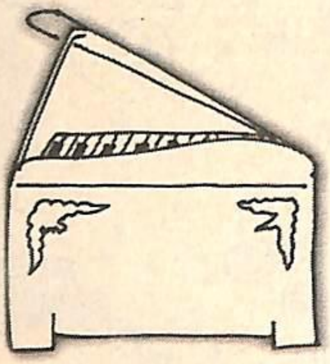

7

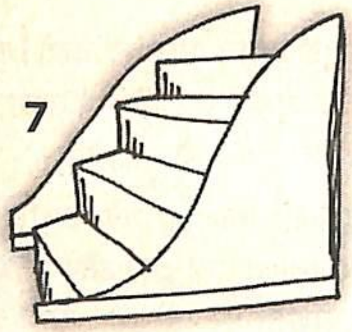

8

10

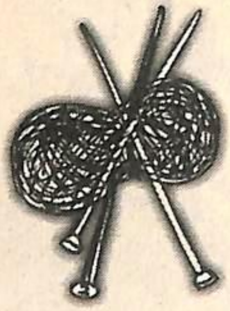

12

15

17

18

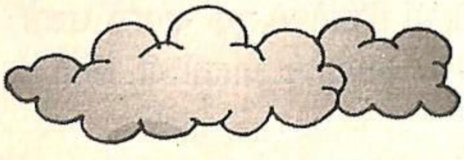

19

20

संकेत ऊपर से नीचे

1

2

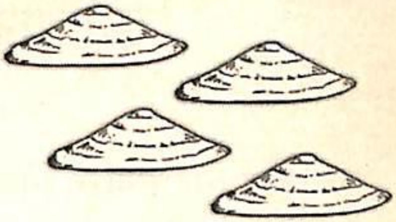

3 'रथ पर मनोज' में है इच्छा, कामना, चाह

4

5

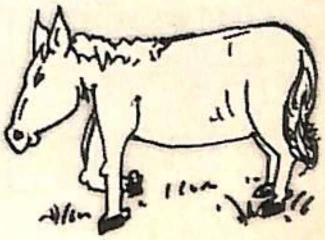

9

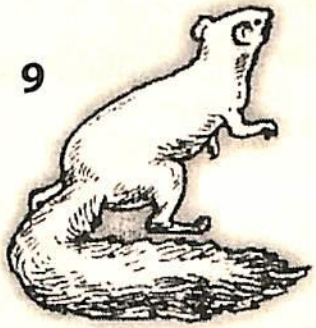

11 पाकिस्तान का प्रसिद्ध शहर

13

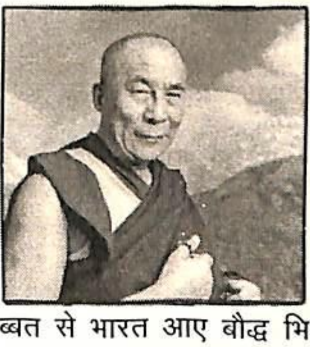

तिब्बत से भारत आए बौद्ध भिक्षु

14

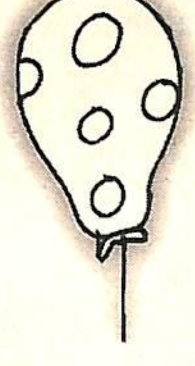

15

16 1/10/2005

17

कागज़ पर चढ़कर, सूर्य तक पहुँचें...

वेस मैगी

एक कागज़ का पन्ना लो और उसे मोड़ो
उसे फिर मोड़ो
और दुबारा-दुबारा मोड़ो
छठवें मोड़ पर कागज़,
1 सेंटीमीटर मोटा हो जाएगा

11 वें मोड़ पर
कागज़ 32 सेंटीमीटर मोटा हो जाएगा
15 वें मोड़ पर वह
5 मीटर ऊँचा हो जाएगा

20 वें मोड़ पर उसकी ऊँचाई
160 मीटर की होगी
24 वें मोड़ पर वह
ढाई किलोमीटर ऊँचा जाएगा
30 वें मोड़ पर वह
160 किलोमीटर ऊँचा होगा
35 वें मोड़ पर वह
5000 किलोमीटर ऊँचा होगा
43 वें मोड़ पर वह
चाँद तक पहुँच जाएगा

और 52 वें मोड़ पर
वह कागज़, पृथ्वी से सूर्य
तक पहुँच जाएगा
इसलिए
एक कागज़ का टुकड़ा लो
और उसे मोड़कर देखो! ●

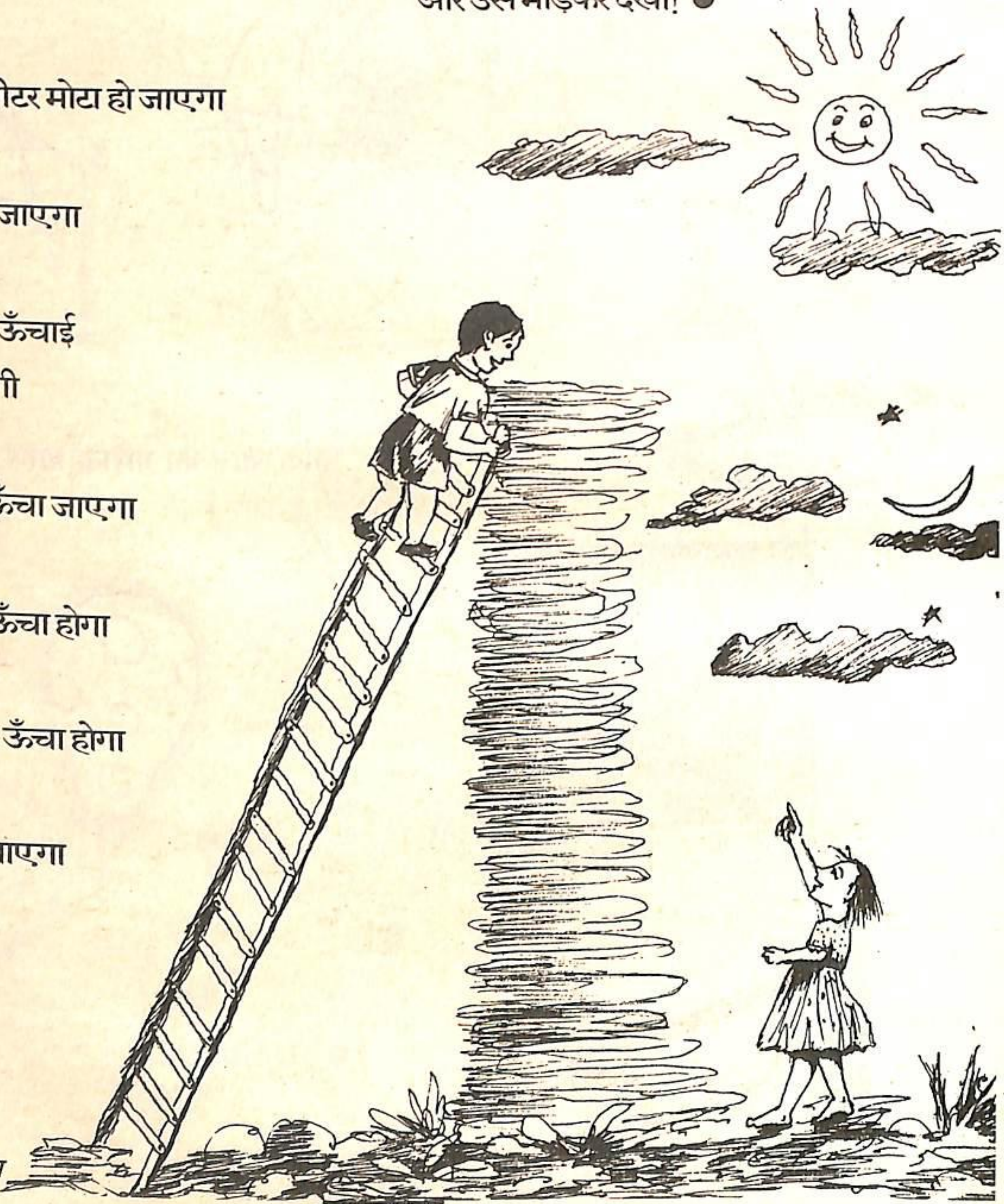

चित्र - संतोष श्रीवास्तव

कहानी लिखो

जुलाई-अगस्त अंक में हमने एक चित्र छापा था और कहा था कि इस पर कोई कहानी लिखो। जवाब में हमें बच्चों के ढेरों पत्र प्राप्त हुए। अधिकांश बच्चों का सोचना था कि चित्र में दिखाई दे रहा कुत्ता लालची है। परछाईं में दिखाई दे रहे कुत्ते की हड्डी छीनने की कोशिश में वह अपनी हड्डी भी गँवा देता है।

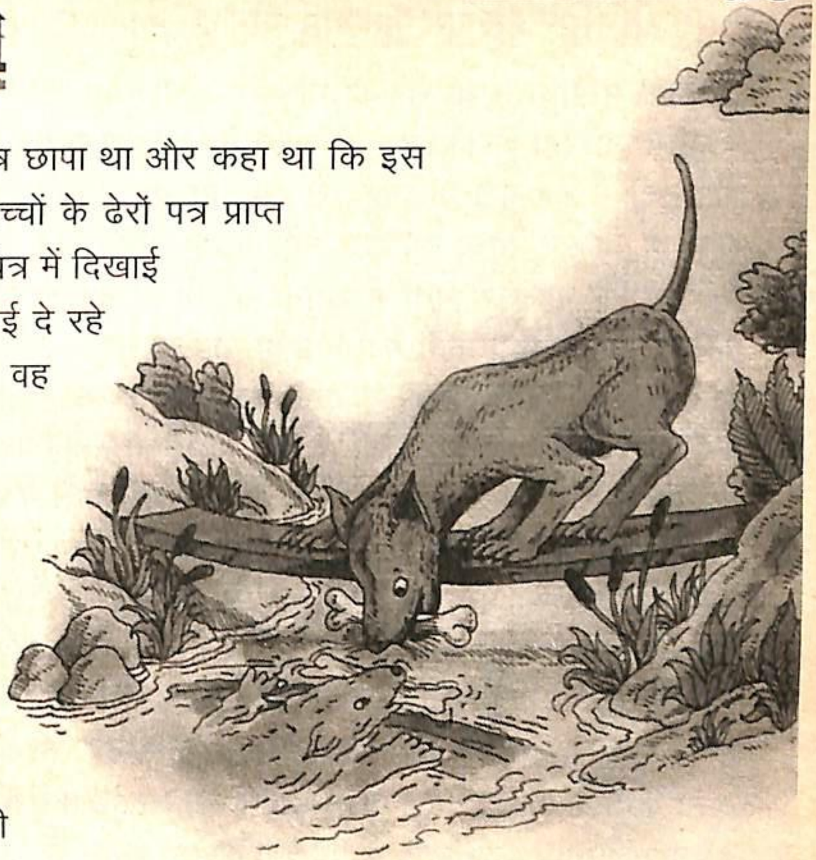

लेकिन यह तो पुरानी कहानी है। दो बच्चों ने कुछ नई तरह से सोचा है। उनकी कहानियाँ हम यहाँ छाप रहे हैं। बताना, ये तुम्हें कैसी लगीं?

एक बात और। अधिकांश बच्चों ने कुत्ते का नाम तो ज़रूर रखा है, पर कहानी का नाम (शीर्षक) नहीं। हम कहानी लिखें या निबंध, उसका शीर्षक ज़रूर रखना चाहिए।

सुष्मिता और प्रशान्त को शाबाशी! उन बच्चों को भी जिन्होंने कहानी लिखकर भेजी। सुष्मिता और प्रशान्त के लिए उपहार के पार्सल भेजे जा रहे हैं।

एक कुत्ता था जिसका नाम पप्पी था। उसको बहुत भूख लगी थी। उसने देखा कि उसके घर के सामने एक हड्डी पड़ी थी। तो उस हड्डी को उसने उठा लिया। फिर उसने हड्डी तो उठा लिया मगर उसके घर के सामने पप्पी के दोस्त एक-दूसरे के साथ खाना बाँटकर खा रहे थे। पप्पी ने सोचा कि मैं भी अपने एक दोस्त को बुला लूँ। तो पप्पी एक नदी के पास गया। तो उसे अपना मुँह दिखाई दिया। उसने सोचा कि मैं इससे बात कर लूँ कि वो मेरे पास आज आए। पप्पी ने सोचा की मेरा घर तो बहुत गंदा है। तो मैं इसके घर चला जाऊँ। तो पप्पी नदी में कूद गया। फिर उसे हड्डी मिली न ही कोई दोस्त।

-बी.एस. सुष्मिता, चौथी, केन्द्रीय विद्यालय-1

मेरा पन्ना

एक मूर्ख कुत्ता था उसका नाम था टॉमी। वह टॉमी नाम का कुत्ता एक बार एक जंगल में घूमने जा रहा था। जंगल के रास्ते में एक पुल पड़ता था और उस पुल के नीचे एक नदी थी। नदी में वह पुल के ऊपर से जा रहा था उसने देखा नदी में मेरे जैसा एक टॉमी और रहता है। उसने सोचा की उस नदी में वह टॉमी कहाँ से आया। पर उस मुर्ख कुत्ते को पता नहीं था कि वह उस नदी में अपना आइना ही देखता है। दूसरे दिन वह कुत्ता सोचता रहा कि यह दूसरा टॉमी कहीं मेरा बिछड़ा भाई तो नहीं। उसने सोचा, अगर यह मेरा बिछड़ा हुआ भाई होगा तो मैं इसे कभी न कभी तो ज़रूर मिलकर आऊँगा। मैं कल ही जंगल से भोजन कर लौटते समय आवाज़ दूँगा- तुम मेरे भाई तो नहीं। पर उस मूर्ख कुत्ते को पता नहीं था कि यह मैं अपने आईने से बात कर रहा हूँ। उस मूर्ख कुत्ते ने सोचा की यह मेरा भाई मुझसे नाराज हो गया है। उसने सोचा न था कि मैं इससे मिला तो क्या पता यह अपने आप ही बोल पड़े। उसने सोचा ऐसा ही करता हूँ। एक दिन वह कुत्ता उस पुल पर से गुज़र रहा था और वह भूख से व्याकुल हुआ था। वह जंगल में भोजन की तलाश में घूमता रहा। तभी उसे एक पेड़ के नीचे से एक बडी-सी हड्डी मिली। उसने उस हड्डी को मुँह में दबाकर पुल के ऊपर जा बैठा। उसने उस पानी के अन्दर झाँककर देखा तो उसने आइने में एक कुत्ता फिर देखा। वह कुत्ता पानी के अन्दर वाला कुत्ता भूख से व्याकुल था। उसने उस कुत्ते से गरदन हिलाकर पूछा हड्डी खाएगा? उस कुत्ते ने गर्दन हिलाकर कहा- हाँ। उस मूर्ख कुत्ते ने सोचा कि यह मेरा भाई मुझे बुला रहा है। वह कूदकर अन्दर गया और टॉमी डूब गया। चिल्लाते बोला- भू-भू-भू, मुझे बचाओ। और कुत्ता पानी में दम घुटकर मर गया।

- प्रशांत कुमार, आठवीं, खिचड़ीपुर, दिल्ली

सितम्बर 2005 का सुडोकू हल

3	4	5	6	7	8	9	1	2
6	7	8	9	1	2	3	4	5
9	1	2	3	4	5	6	7	8
5	6	7	8	9	1	2	3	4
2	3	4	5	6	7	8	9	1
8	9	1	2	3	4	5	6	7
1	2	3	4	5	6	7	8	9
7	8	9	1	2	3	4	5	6
4	5	6	7	8	9	1	2	3

सितम्बर 2005 की चित्र पहेली का हल

1 ज		2 म	च्छ	3 र		4 अँ	5 गो	छा
6 वा	म	न		7 थ	न		ब	
न		का		वा		8 फि	र	9 की
	10 नी		11 अ	न	12 ल			ल
13 ग	म	ला			14 गा	ज	15 र	
र			16 ज़	17 मी	न		स्सी	
18 बा	19 द	ल		रा		20 साँ		21 म
	राँ		22 का	बा		23 क	ल	श
24 प	ती	ला		25 ई	मे	ल		क

मेरा सपना

पिछले दिनों शासकीय नवीन उ.मा. विद्यालय, भोपाल में प्रवेशोत्सव के दौरान आठवीं कक्षा के बच्चों से पूछा गया कि बड़े होकर वे क्या करना चाहते हैं? कहा गया कि वे अपने सपने के बारे में लिखें। इस पर अनेक बच्चों ने अपने सपने के बारे में लिखा। कुछ बच्चों के सपने इस प्रकार थे -

मैं बड़े होकर टीचर बनना चाहूँगी और अपने दम पर जीना चाहूँगी। मुझे किसी की धौंस या जोर, किसी का कर्ज़ अच्छा नहीं लगता। इसलिए मैं अपनी मर्जी की मालकिन बनना चाहती हूँ। और मैं अपनी मर्जी से शादी करूँगी और मैं देश में अपना नाम कमाना चाहती हूँ।

- रोशनी

मेरा सपना है कि मैं पढ़-लिखकर कार की एक नई दूकान खोलना चाहता हूँ। मेरी मम्मी भी यही कहती है कि तू बेटा पढ़-लिखकर बहुत अच्छी कार की दूकान खोलकर अपने भाई और बहन को पढ़ा-लिखाकर उनकी शादी करना।

- मोहन धुर्वे

हे भगवान! आप मेरा सपना सच करना कि अपने पास एक अच्छा-सा बड़ा घर हो और उस घर में सब मुझे दीदी कहें। मुझे अपने सपने में दीदी सुनना अच्छा लगता है।

- दीपा राजपूत

मैं बड़ा होकर पुलिस ऑफिसर बनना चाहता हूँ जिससे जो लोग जुआ खेलते हैं उन्हें पकड़कर जेल में बन्द करूँगा और चोरों को पकड़ूँगा और जो लोग शराब पीकर अपने बीवी-बच्चों को मारते हैं उन्हें समझाऊँगा। और जो लोग अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते उन्हें भी।

- धर्मेन्द्र

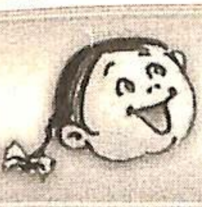

मैं अपनी माँ को जब काम करते देखती हूँ तो मुझे बहुत बुरा लगता है। इसलिए मैं इंस्पेक्टर बनकर बहुत पैसा कमाना चाहती हूँ।

- कविता गोपनारायण

हमारे पास घर नहीं है। मैं बड़ा होकर हमारे लिए एक घर लेना चाहता हूँ।

- संतोष अहिरवार

चित्र बनाओ

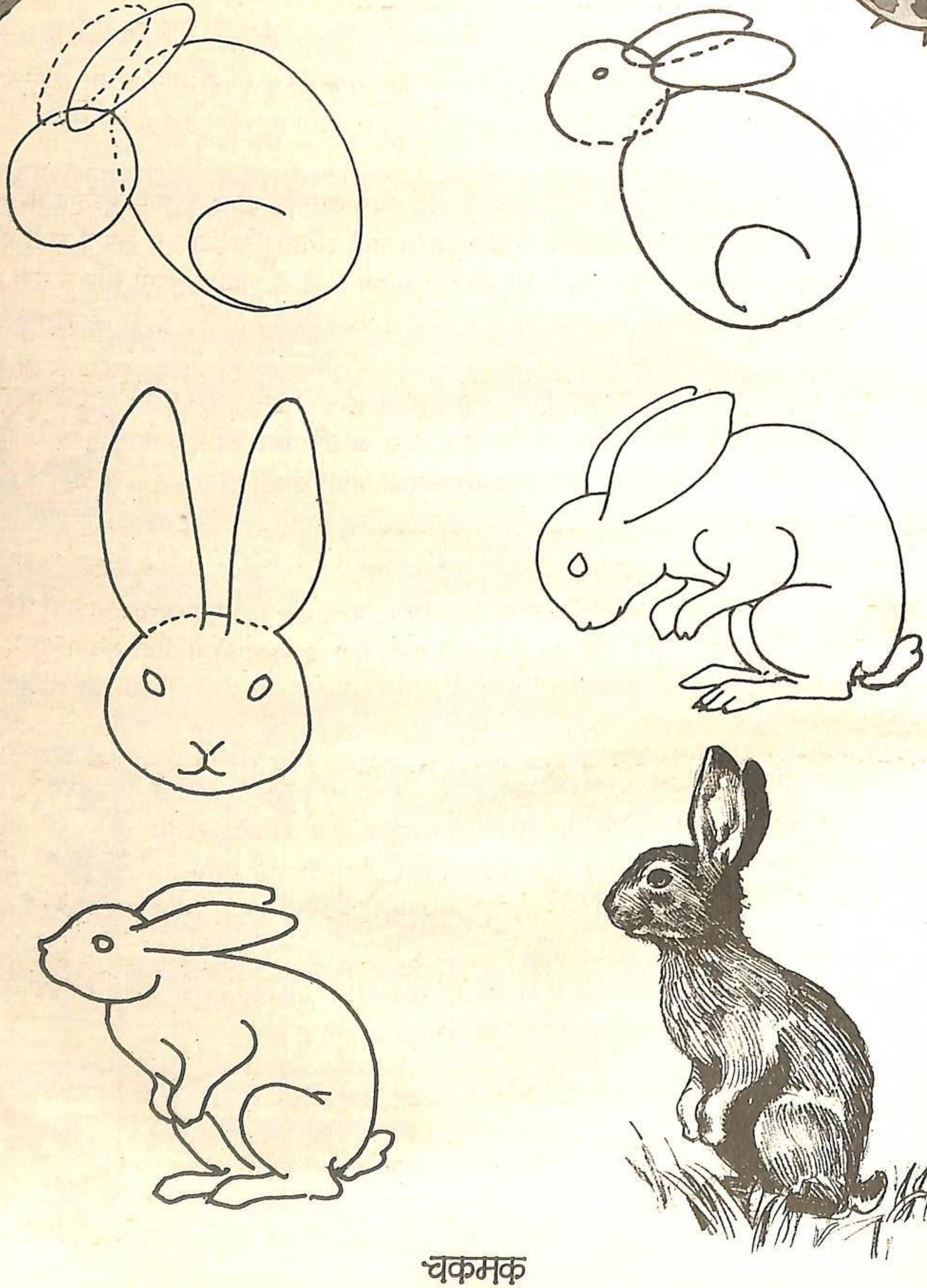

प्रयोग

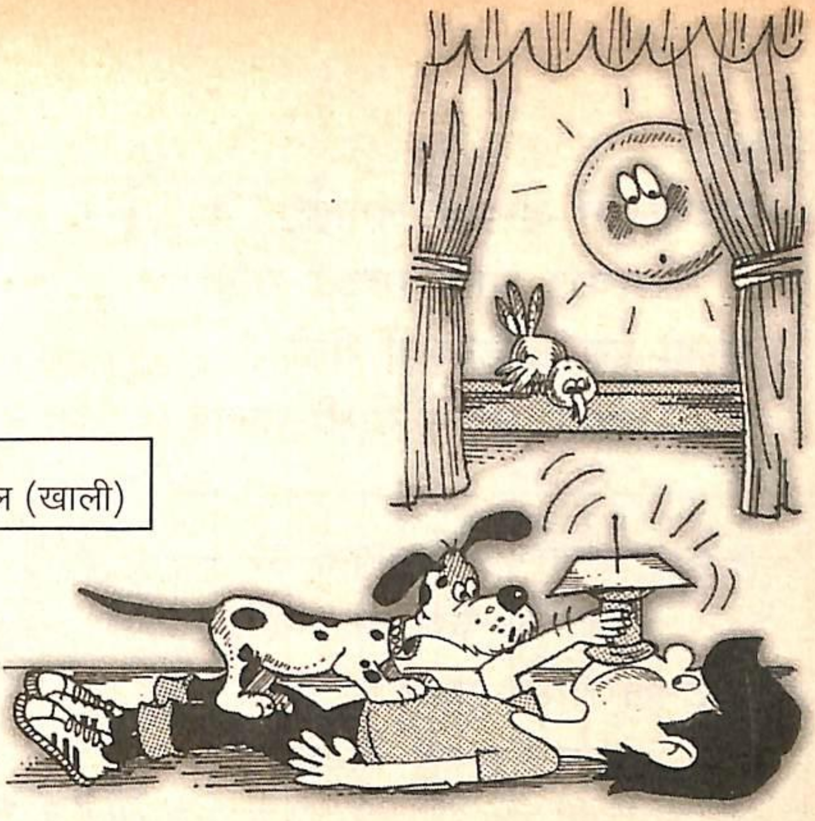

ज़रूरी चीज़ें

मोटा कागज़, कैंची, पिन, धागे की रील (खाली)

- ❊ मोटे कागज़ का अंदाज़न तीन इंच लम्बा और तीन इंच चौड़ा टुकड़ा काट लो।
- ❊ इसे धागे की रील के ऊपर रखो।
- ❊ इस कागज़ में एक पिन इस तरह चुभाओ की उसका नुकीला सिरा रील के छेद में रहे।
- ❊ अब पीठ के बल लेटकर रील को मुँह पर रख लो।
- ❊ इस रील के छेद से फूँक मारकर मोटे कागज़ को उड़ाना है।

तुम्हें क्या लगता है। क्या कागज़ उड़ जाएगा?

करके देखो।

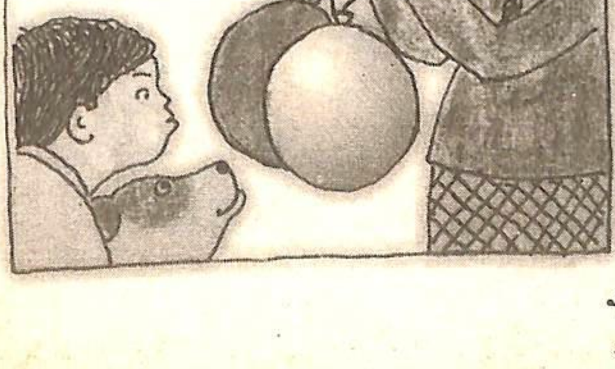

- ❊ दो गुब्बारों को फुलाकर, एक साथ सटाकर पकड़ लो।
- ❊ अपने किसी दोस्त से दोनों गुब्बारों के बीच में फूँक मारने को कहो।
- ❊ क्या गुब्बारें एक दूसरे से अलग हो जाते हैं?

भाई भाई

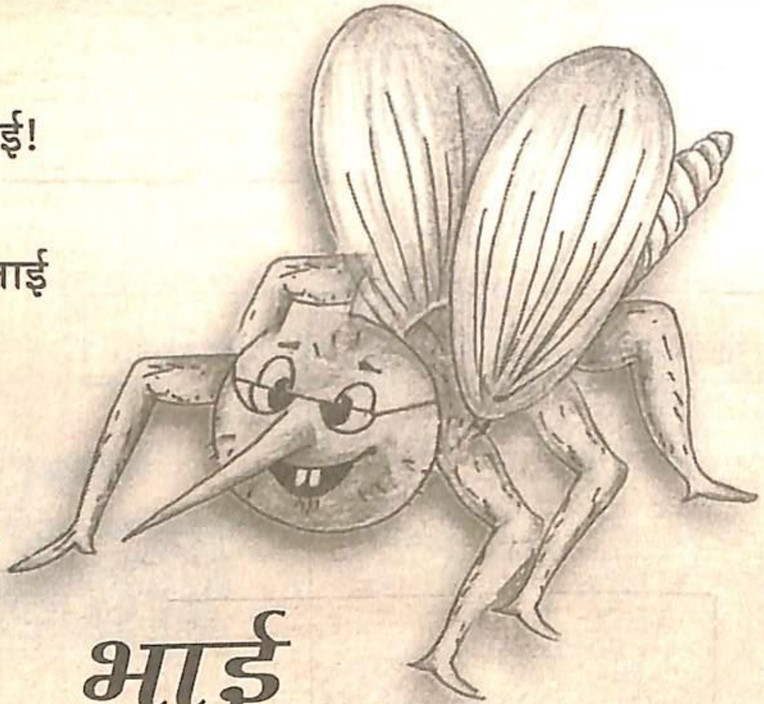

खटमल ने आवाज़ लगाई
मच्छर भाई! मच्छर भाई!
आओ इस खटिया में बैठो
क्या है घर में खुशी-भलाई

मच्छर बोला- क्या बकते हो
तुम मेरे कैसे हो भाई
खटमल बोला- खटिया देखो
पेटूलाला पड़े दिखाई

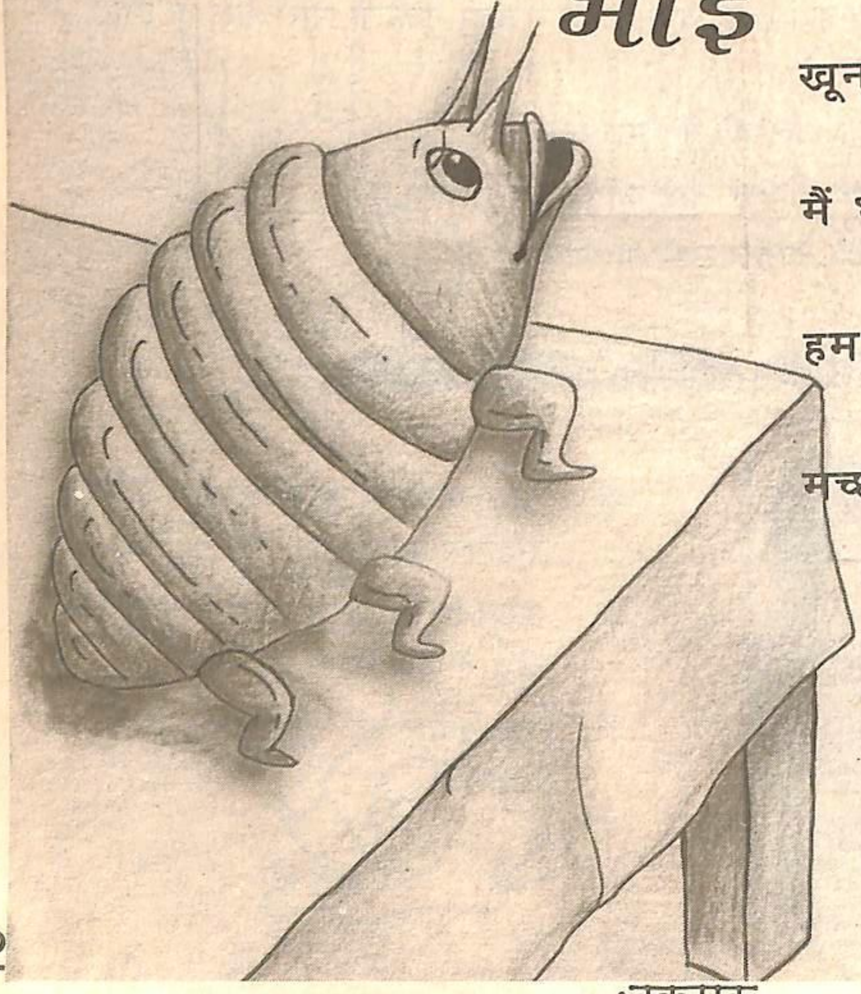

खून उन्हीं का पीकर तुमने
इतनी अच्छी हेल्थ बनाई
मैं भी वही खून पीता हूँ
जिससे मेरी देह ललाई
हम दोनों में खून एक है
इसीलिए हम लगते भाई
मच्छर ने बाहें फैलाई
गले मिल गए दोनों भाई

- *हरीश निगम*

चित्र- सुनील सिंह

सुडोकू

सुडोकू नामक यह पहेली तुमने पिछले अंक में देखी होगी। इसे भरने की कोशिश भी की होगी। इस बार एक आसान सुडोकू यहाँ दे रहे हैं।

सुडोकू में आमतौर पर 9 x 9 खानों की एक जाली होती है। यह 3 x 3 खानों के 9 छोटे हिस्सों में बँटी होती है जिन्हें इलाका कहते हैं। कुछ खानों में पहले से अंक दिए रहते हैं। पहेली सुलझाने वाले को बस खाली पड़े खानों में 1 से 9 तक के अंक भरने होते हैं। हाँ, लेकिन यहाँ एक शर्त है। आपको यह ध्यान रखना होगा कि किसी भी आड़ी लाइन, खड़ी लाइन या इलाके में 1 से 9 तक के सारे अंक केवल एक ही बार आना चाहिए।

7	5	3	1	9	6	4	8	
8		6			4			3
4		2			8			9
3	8	5	4	2	1	9	6	7
6		4			9			8
9		1			3			5
2	4	8	3	6	5	7	9	1
5		7			2			4
1	3	9	8	4	7	5	2	6

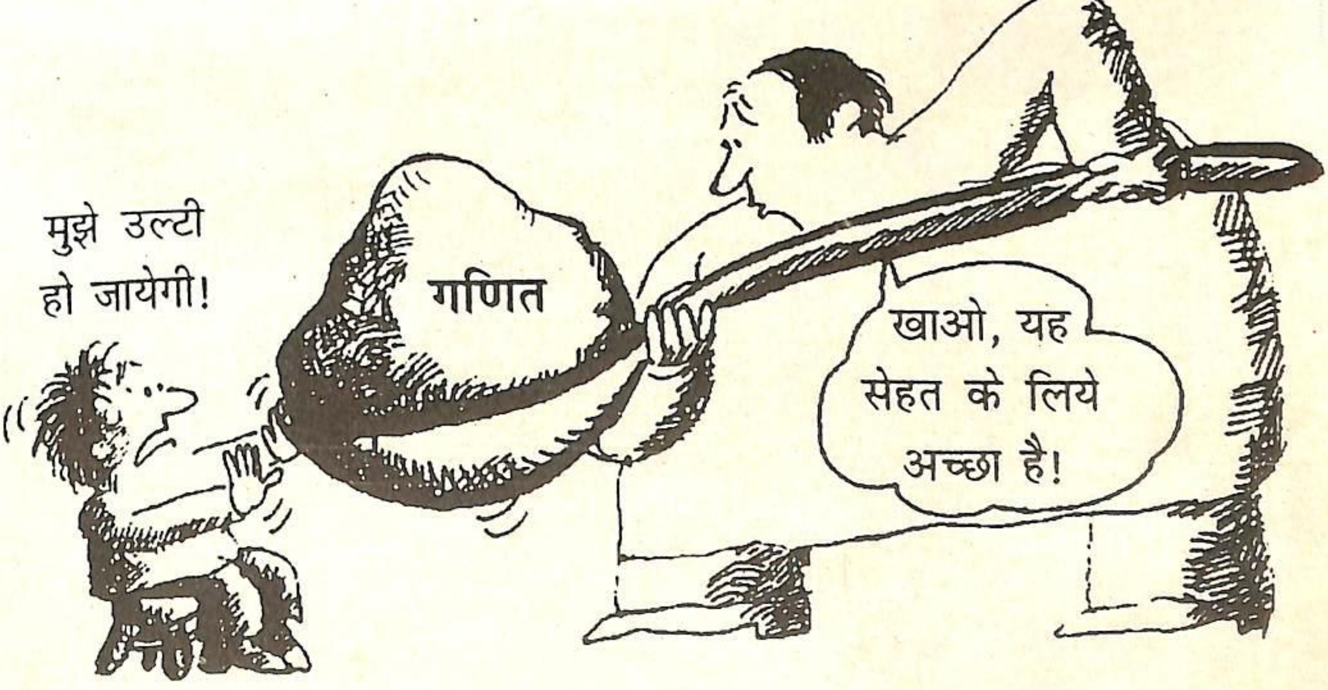

सच्ची कहानी

मेरी रानी की कहानी

लीना मेहेंदले

यह घटना है सन् 1983 की। तब मेरी पोस्टिंग महाराष्ट्र के सांगली ज़िले में ज़िला परिषद् की प्रमुख कार्यकारी अधिकारी के पद पर हुई थी। महाराष्ट्र प्रशासन की दृष्टि से यह पोस्ट ज़िलाधिकारी के समकक्ष मानी जाती है, हालांकि ज़िले में अलग से एक ज़िलाधिकारी भी होता है।

अंग्रेज़ों के ज़माने में सांगली एक संस्थानिक राज्य हुआ करता था। अर्थात वहाँ एक राजा था और राजाओं के अपने शौक। सो उन्होंने एक बड़ा-सा चिड़ियाघर खोल कर उसमें कई पशु-पक्षी पाले थे। स्वतंत्रता के बाद राजपाट समाप्त हो गए और वह चिड़ियाघर भी सार्वजनिक हो गया। वहाँ शेर और शेरनियाँ भी थीं और जब उनके छोटे बच्चे पैदा होते, तो उन्हें सरकस के मालिकों के हाथ बेच दिया जाता था। इससे चिड़ियाघर को कमाई भी हो जाती थी।

क्या तुम जानते हो कि चिड़ियाघर का खर्चा कैसे चलता है। शहर की नगरपालिका यह खर्चा चलाती है? प्रायः उनके पास पैसे कम होते हैं और चिड़ियाघरों की देखभाल ठीक से नहीं हो पाती। उधर सरकस के मालिक भी जानवर बच्चों को खरीद कर उन्हें तरह-तरह की कलाबाज़ियाँ सिखाने के लिए कई बार उनके साथ क्रूरता से पेश आते हैं। इसलिए सरकार बीच-बीच में नियम बनाती है कि छोटे बच्चे जानवर नहीं बेचे जाएँगे। कुछ समय बाद ये नियम फिर ढीले पड़ जाते हैं।

उन दिनों भी सरकार ने रोक लगाई थी कि शेर

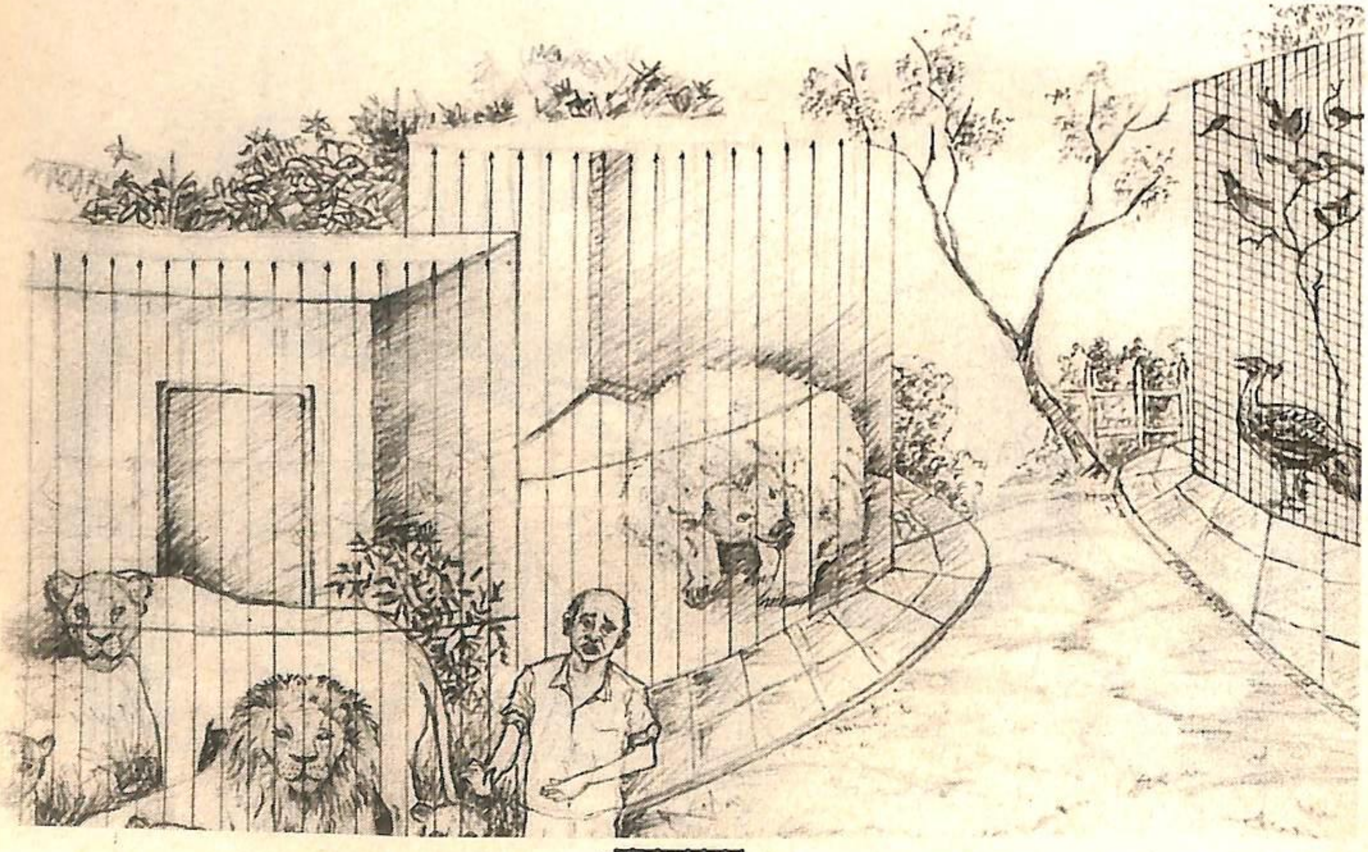

के छोटे बच्चे सरकस में नहीं बेचे जाएँगे। इधर सांगली नगरपालिका के पास पैसे नहीं थे कि जानवरों की ठीक से देखभाल हो। उसी समय चिड़ियाघर की एक शेरनी ने तीन बच्चों को जन्म दिया। चिड़ियाघर के कर्मचारी खुश थे, लेकिन अधिकारीगण दुखी हो गए। उन्हीं दिनों महाराष्ट्र के गवर्नर श्री लतीफ सांगली ज़िले के दौरे पर आए। शाम को उन्होंने शेर के नए बच्चे देखने चाहे। बच्चों को टोकरियों में भर कर लाया गया। मैं और जिलाधिकारी गवर्नर का सारा इंतज़ाम देख रहे थे और अन्दर उनसे बातें कर रहे थे। पर बाहर कुछ खुसर-पुसर हो रही थी। मैं बाहर आई। पूछा तो नगरपालिका के कर्मचारी चिंता जता रहे थे कि आगे इन बच्चों के खर्चे की व्यवस्था कैसे होगी। झट मेरे दिमाग में कुछ बातें कौंध गईं।

कुछ वर्ष पहले हम लोगों ने किस्से पढ़े थे कि धुले गाँव के एक डॉक्टर पूर्णपात्रे अपने घर में शेर और बाघ को पाला करते थे। उनकी एक शेरनी सोनाली बड़ी मशहूर थी, जिसे बाद में उन्होंने पुणे के चिड़ियाघर में रखवा दिया था। मैं अपने परिवार के साथ, खासकर बच्चों के साथ उसे देखने कई बार जाया करती थी। खासकर जब डॉ. पूर्णपात्रे पुणे आते थे और सोनाली के पिंजरे में जाकर उससे मिलते थे तो सोनाली भी उनकी गरदन से लिपट कर तरह-तरह की आवाज़ें निकालती थी। मानों उनसे हज़ार बातें कर रही हो। वह दृश्य देखने वालों के दिल भर आते थे।

नगरपालिका की चिंता सुनकर मैंने सोचा क्यों न मैं भी शेर के इन बच्चों को पाल लूँ? नगरपालिका के खर्चे का बोझ कुछ कम हो जाएगा। किसी खास जानकारी की आवश्यकता हुई तो डॉ. पूर्णपात्रे को चिट्ठी लिख दूँगी। नगरपालिका वालों ने हाँ कर दी तो मैंने वन विभाग से अनुमति ली। फिर घर के लम्बे-चौड़े बगीचे में एक बहुत बड़ा पिंजरा बनवाया। पिंजरे में सौ-सौ वर्ग फुट के दो खाने थे। दोनों पिंजरों से बाहर आने जाने के लिए दरवाज़ा था। ऊँचाई भी करीब 15 फुट थी। अनुमति और पिंजरे में एक महीना बीत गया। फिर वह छोटी शेरनी हमारे घर आई जिसे मैंने चुना था। हमने उसका नाम रखा रानी। लेकिन अब रानी बड़ी होकर तीन माह की हो

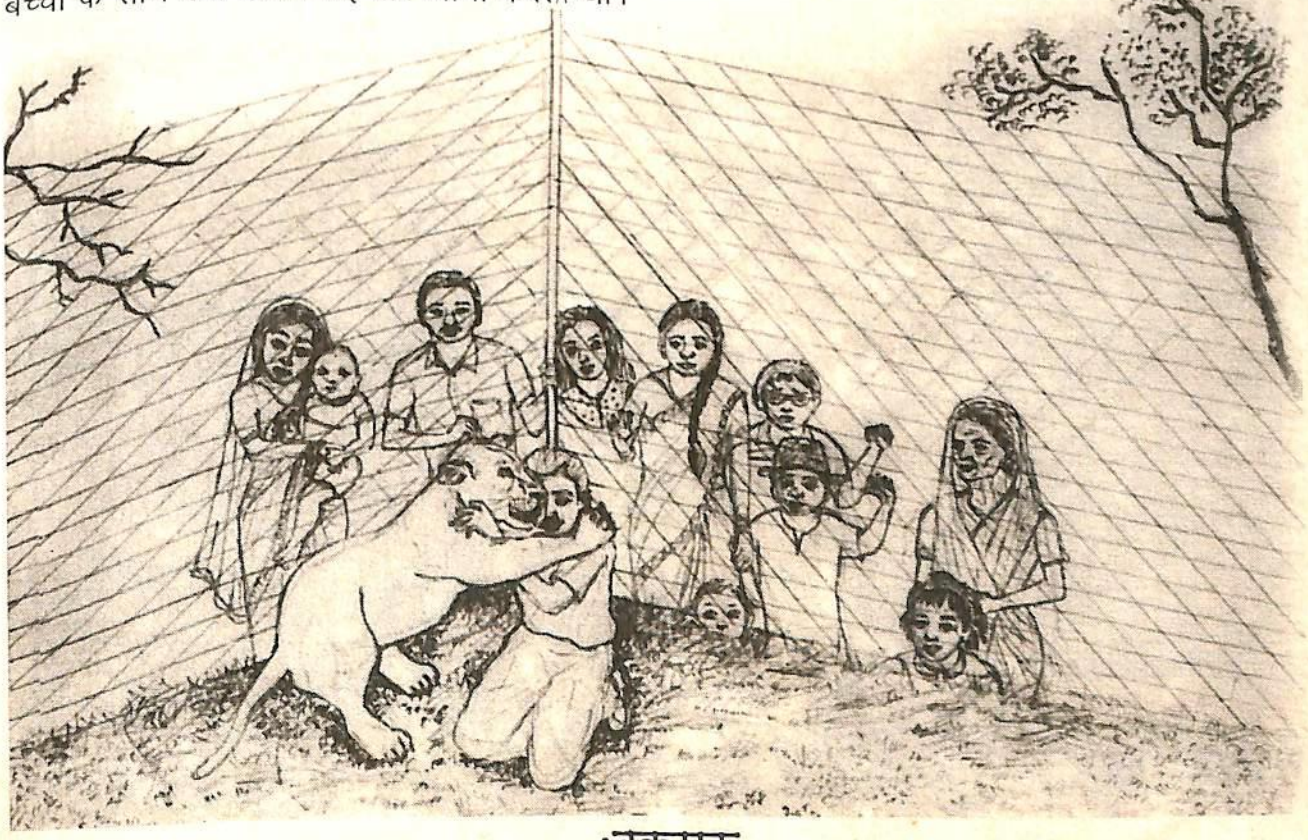

गई थी। उतनी अबोध नहीं थी, जितनी मैंने पहली बार देखी थी। मेरी अनुपस्थिति में उसे पिंजरे से बाहर नहीं रखा जा सकता था। पहले मैंने सोचा कि जब इसे पिंजरे में ही रखना पड़े तो फिर क्या चिड़ियाघर और क्या मेरा घर। लेकिन चिड़ियाघर का उसका कमरा अँधेरा, सीलन भरा और छोटा-सा था। हमने यही सोच कर उसे रख लिया कि यहाँ पिंजरा तो बड़ा है और खुला-खुला है।

पहले दिन उसने खूब ऊधम मचाया। वह पिंजरे की छड़ें पकड़ कर बंदर की तरह ऊपर तक चढ़ जाती और देखती कि वहाँ से कोई बाहर निकलने का रास्ता है या नहीं। फिर उसे खींच कर नीचे उतारना पड़ता था। इस बीच मैंने कई बार चिड़ियाघर जाकर उससे थोड़ी सी दोस्ती बनाई थी। वह थी बिल्ली के बच्चे की ही तरह, लेकिन वज़न में बहुत भारी थी। धीरे-धीरे मेरी उसकी दोस्ती बढ़ने लगी। मैं सुबह-सुबह उसके पिंजरे के अंदर चली जाती। सफाई के लिए उसे दूसरे पिंजरे में भेज देती। उसे दूध देना, पानी देना और उससे बातें करना यह हर दिन सुबह का काम होता था। सप्ताह में दो बार उसे कच्चा माँस खिलाती थी। वह भी मैं अपने हाथ में टुकड़े रख कर। इसीलिए उसने मेरी दोस्ती स्वीकार की थी। जब मैं ऑफिस जाती तो उससे कहती, 'रानी मैं आफिस जा रही हूँ।' फिर वह देर तक पिंजरे की उस दिशा में खड़ी रहती, जिधर से मेरी कार जाती थी। वापस आने पर मैं उसे बताती, 'रानी मैं वापस आ गई हूँ।' वह तुरंत पिंजरे के पास आती और सर सहलाने को कहती।

मेरे बच्चे और पड़ोस के कई बच्चे बाहर से ही उससे बातें करते, लेकिन कभी मुझे दूरदराज़ के गाँवों में भी जाना पड़ता था। उन दो तीन दिनों के लिए रानी अकेली पड़ जाती थी। मेरे लौटने पर वह खूब उछलकूद मचाती थी। एक बार मैं टूर से लौटी तो देखा रानी के पैर की हड्डी टूट गई थी। पता चला

कि चिड़ियाघर का उसका जानने वाला कर्मचारी शिकलगार घर में आया था।

उसने रानी को बाहर भी निकाला। कुछ उसके साथ खेला कूदा भी। फिर क्या हुआ यह मैं ठीक से नहीं जान सकी, लेकिन शहर के प्रख्यात अस्थि विशेषज्ञ डॉ. कुलकर्णी ने उसके पैर पर प्लास्टर लगाया। कुछ एक्सरे भी किए, जो आज भी उनके संग्रह में यादगार बने हुए हैं। 10-12 दिनों में रानी ठीक भी हो गई। यों तीन माह बीते। जो रानी पहले एक फुट लम्बी थी, अब साढ़े चार फुट लंबी हो गई थी और अब मैं उसे पहले की तरह गोद में नहीं उठा सकती थी।

फिर एक दिन मुझे 15 दिनों के लिए बाहर जाने की नौबत आई। बच्चों के साथ रहने के लिए गाँव से मेरी माँ आ गई। घर में पैर रखने से पहले ही बोल पड़ी 'यह रानी यहाँ क्यों है? मैंने तुम्हें कई चिट्ठियाँ लिखी थीं कि इसे वापस भेज देना। अब तो तुम्हें चुनना पड़ेगा, या तो मैं यहाँ रहूँगी या यह रानी! मैं बच्चों की देखभाल कर सकती हूँ। पर शेर की नहीं।' इस प्रकार रानी फिर विदा हुई सांगली नगरपालिका के उसी छोटे से कमरे में जहाँ से उसे निकालने के लिए मैं ले आई थी। फिर मैं बीच-बीच में चिड़ियाघर जाकर उससे मिलती और बाहर से उससे बातें करती। चिड़ियाघर वाले मुझे अंदर जाने की अनुमति देकर रिस्क नहीं उठाना चाहते थे। फिर मेरा सांगली से तबादला हो गया। फिर भी करीब एक वर्ष तक यदाकदा मैं सांगली गई तो देखा कि उसे मेरी याद थी और रानी पुकारने पर वह पास आ जाती थी। धीरे-धीरे वह भूल गई और मेरा वहाँ जाना भी बन्द ही हो गया।

इस बीच रानी तीन बच्चों को जन्म दे चुकी है। शिकलगार बूढ़ा होकर रिटायर हो चुका है। कभी-कभी मिलने आता है। सांगली चिड़ियाघर के पुराने कर्मचारी पूछते हैं 'आप कोई नया बच्चा रखेंगी?' लेकिन कई अच्छे काम जीवन में एक बार हो पाते हैं, बार-बार नहीं होते। ●

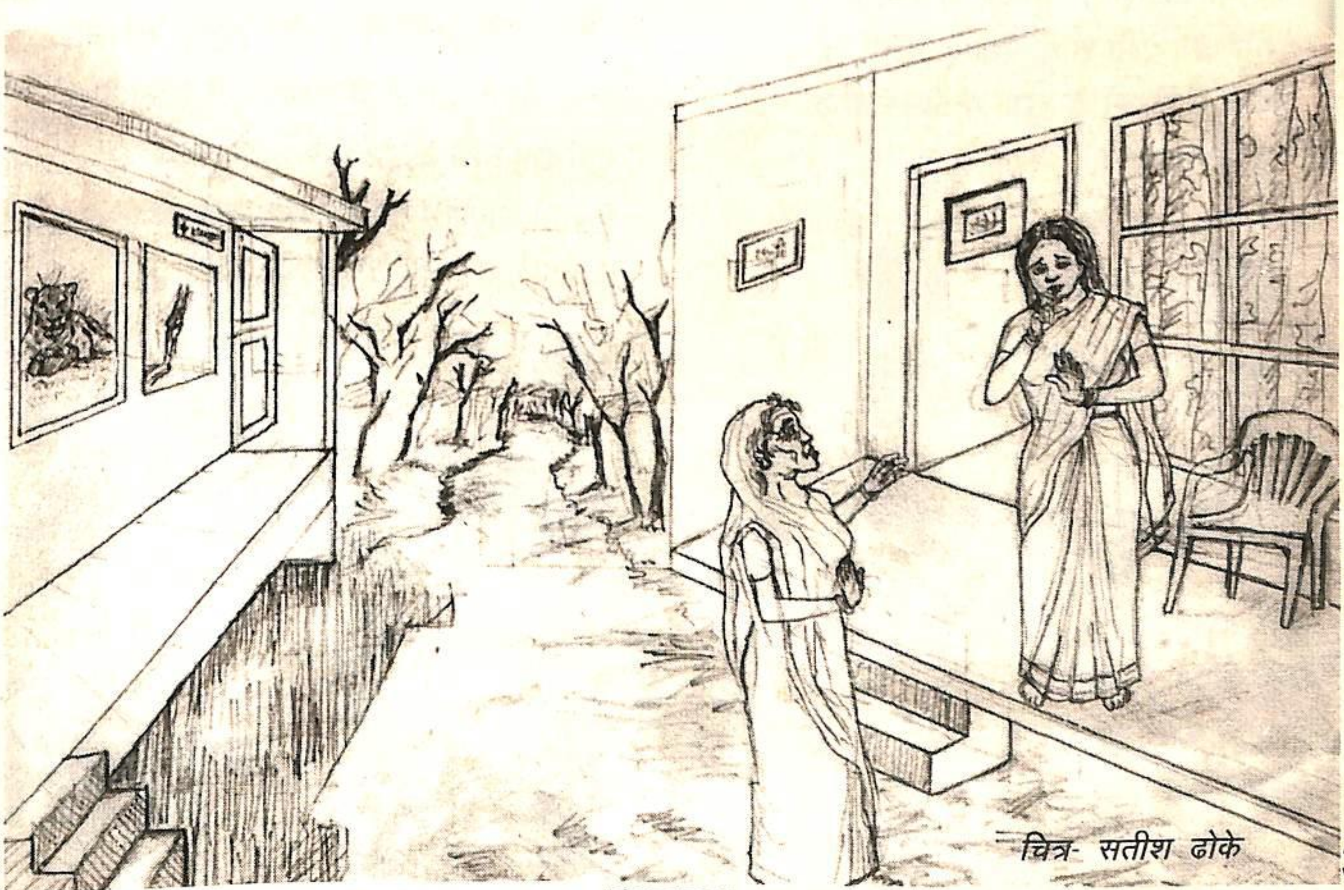

चित्र- सतीश ढोके

माथा पच्ची

1

यह आकृति सात सिक्कों से बनी है। इसमें पाँच ऐसी सीधी रेखाएँ खींची जा सकती हैं जिनमें से हरेक में तीन सिक्के हों। जैसे -

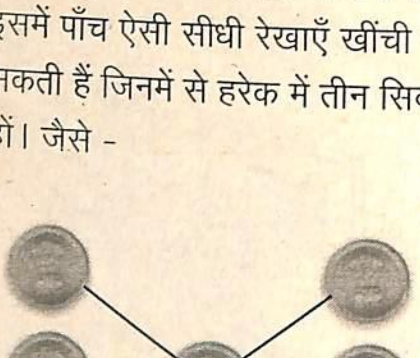

तुम्हें इस आकृति में दो सिक्के इस तरह रखना है कि नई आकृति में तीन-तीन सिक्कों वाली दस सीधी रेखाएँ बनें।

2

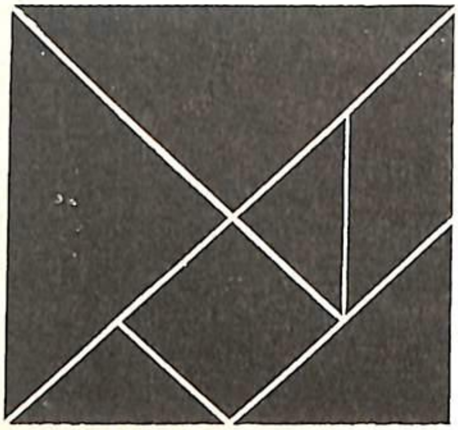

टैनग्राम एक चीनी पहेली है।

टैनग्राम पहेलियाँ चकमक में पहले भी छप चुकी हैं।

टैनग्राम एक वर्ग को सात टुकड़ों में काटकर बनाया जाता है।

टैनग्राम बनाना आसान है। एक पुराने पोस्कार्ड या मोटे कागज़ पर टैनग्राम की आकृति उतार लो और फिर इसके टुकड़े काट कर अलग कर लो।

इन्हीं सातों टुकड़ों से हज़ारों चीज़ें बनती हैं।

यहाँ हम पाँच आकृतियाँ दे रहे हैं।

ये सभी आकृतियाँ इन सात टुकड़ों को जमाकर बन जाएँगी। ज़रा कोशिश करके देखो!

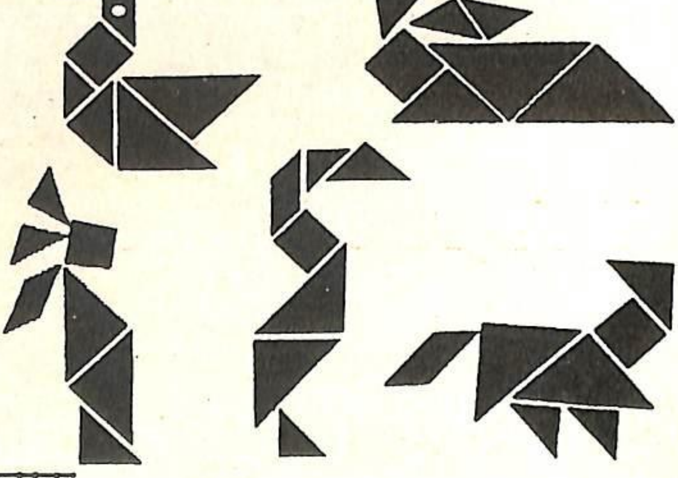

अधूरी कविता पूरी करो

चकमक के जुलाई-अगस्त अंक में हमने एक अधूरी कविता 'चन्दू के चाचा ने....' छापी थी और कहा था कि इसे पूरा करो। इसके जवाब में हमें बच्चों के ढेरों पत्र प्राप्त हुए हैं। कई बच्चों ने बहुत अच्छी कोशिश की है। सबसे अच्छी कोशिश रही ***जयपुर*** के ***मनीष जैन*** की। उन्होंने इस कविता को इस तरह पूरा किया-

चन्दू के चाचा ने चन्दू की चाची को
चाँदनी चौक में चटनी चटाई।

कक्कू के काका ने कक्कू की काकी को
काँदीवली कॉटेज की कोक पिलाई।

मुन्नू के मामा ने मुन्नू की मामी को
मेरठ में मावा मलाई खिलाई।

नन्नू के नाना ने नन्नू की नानी को
नौलखा नग में नथनी नथाई।

तो मनीष को शाबाशी! उसे हम एक उपहार भी भेज रहे हैं। जिन बच्चों ने कविता भेजी उन सबको शाबाशी!

एक मज़ेदार बात और बताएँ। जुलाई-अगस्त अंक में छपी अधूरी कविता पढ़कर एक अंकल से भी नहीं रहा गया और उन्होंने भी कविता को पूरा करके भेजा है। देखना चाहोगे अंकल ने इस कविता को कैसे पूरा किया? तो देखो-

नीलू के नाना ने

नीलू के नाना ने नीलू की नानी को
नन्ही-सी नाव में सैर कराई।

मीनू के मामा ने मीनू की मामी को
मुम्बई मॉल में मूवी दिखाई।

कीनू के काका ने कीनू की काकी को
कोलकता में कविता सुनाई।

दीनू के दादा ने दीनू की दादी को
दिल्ली में दीनों की दुनिया दिखाई।

भोलू के भाई ने भोलू की भाभी को
भोपाल में भेलपूरी खिलाई।

चीनू के चाचा ने चीनू की चाची को
चैन्नै शहर में **चकमक** पढ़ाई।

कैसी लगी अंकल की कविता? अच्छी लगी हो तो एक पोस्टकार्ड लिखकर उन्हें 'शाबाश अंकल' कहना। अंकल का पता है - श्री श्याम सुशील, ए-13, जनयुग अपार्टमेण्ट्स, वसुंधरा एनक्लेव, दिल्ली-110 096 ●

केन-गु-रू उर्फ कँगारू

सन् 1770 की बात है। जब जेम्स क्रुक नामक नाविक ऑस्ट्रेलिया पहुँचा तो उसने एक अनोखा प्राणी देखा। ऐसा जीव वह पहली बार देख रहा था। यह दो पैरों पर सीधे खड़े होने की स्थिति में आराम से पूँछ पर बैठता था। झुण्ड में रहता था। जब इस नाविक ने वहाँ के एक व्यक्ति से उसका नाम पूछा तो वह बोला - केन-गु-रू। दरअसल उसकी भाषा में केन-गु रू यानी 'मैं समझा नहीं' होता है। इस नाविक ने समझा कि वह उस जीव का नाम बता रहा है। बस इस गलतफहमी के कारण इस जीव का नाम पड़ा कँगारू।

मादा कँगारू के पेट से एक थैली लटकी रहती है। इस थैली में वह अपने बच्चे को लिए घूमती है। बच्चा जन्म के पाँच मिनिट के भीतर इस थैली में पहुँच जाता है। कँगारू अविकसित अवस्था में जन्म लेते हैं। जन्म के समय वे मुश्किल से दो से तीन सेण्टीमीटर लम्बे होते हैं। उस वक्त वे बिना रोओं वाले चूहों के बच्चों जैसे दिखते हैं। जन्म के समय कँगारू की सूँघने की क्षमता अच्छी तरह विकसित होती है। ऐसे ही उसके हाथ और पैर भी तब मजबूत होते हैं। जीभ चूसने में सक्षम होती है। इन्हीं दो-तीन चीज़ों के कारण उसे थैली में जा पाने में खास दिक्कत नहीं होती। हाँ, पर उनके कान अक्रिय होते हैं। फेफड़े, मस्तिष्क आदि अंग भी पूरी तरह विकसित नहीं होते हैं। इसलिए पूरी तरह से विकसित होने तक उनकी सुरक्षा ज़रूरी होती है। थैली में पहुँचते ही बच्चे को सुरक्षा के साथ-साथ माँ का दूध भी मिल जाता है। आमतौर पर कँगारू के एक बच्चा ही पैदा होता है। अगर एक से ज़्यादा बच्चे पैदा हो जाएँ तो सबसे स्वस्थ बच्चा ही वयस्क में विकसित हो पाता है। शिशु थैली के अंदर दो माह तक रहता है। पाँच माह का होते होते यह बाहर स्वतंत्र रूप से घूमना-फिरना शुरू कर देता है।

कँगारू शाकाहारी प्राणी है। इसके हाथ भले ही कम विकसित हों पर पैर लम्बे, मज़बूत और दौड़ने में माहिर होते हैं। पूँछ तो इतनी मज़बूत और मोटी होती है कि अकेली पूँछ ही सारे शरीर का भार सँभाले रहती है। कँगारू की नज़र बहुत तेज़ होती है। इसके अलावा इसमें सूँघने और सुनने की जबर्दस्त क्षमता होती है। दुश्मन से बचने के लिए यह लम्बी कूदें मारता हुआ दौड़ता है। इसके बावजूद अगर दुश्मन से सामना हो ही जाए तो यह उसे काटने और नोचने और लात मारकर छकाने की कोशिश करता है। कँगारू घास पर निर्भर रहते हैं। जंगलों की अँधाधुँध कटाई के कारण बन रहे चरागाहों के कारण इनकी संख्या में बहुत बढ़ोतरी हुई है। ऑस्ट्रेलिया में आज भी इनकी संख्या काफी ज़्यादा है। ऑस्ट्रेलिया हर साल कँगारू के माँस का निर्यात कर काफी कमाता है। कहते हैं इस देश में हर साल बीस लाख कँगारू माँस के लिए मार दिए जाते हैं। ●

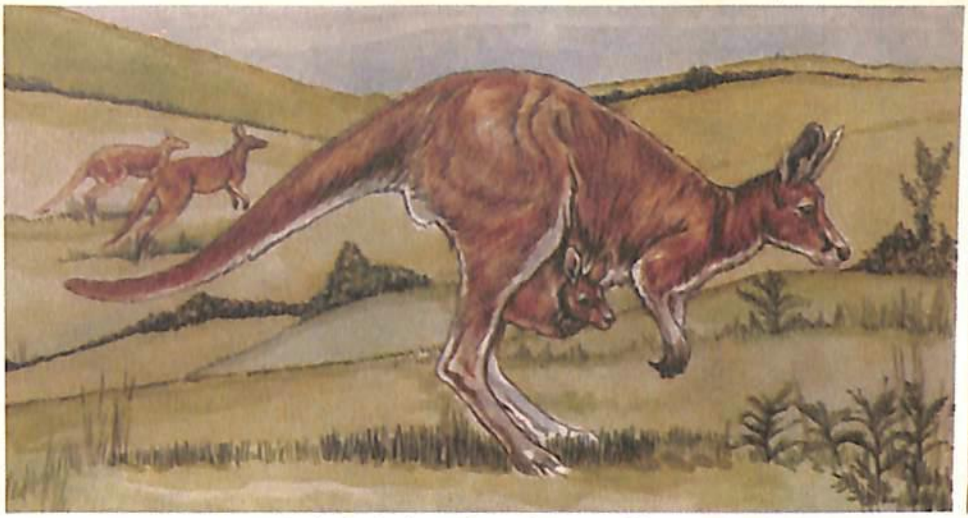

बच्चा अभी थैली में है। यहीं उसे खाना मिल जाता है

नहाने का समय! माँ बच्चे को
जीभ से चाटकर नहला रही है

मज़े–मौज़ का समय

चलो कुछ शरारत की जाए

बहुत थक गए! थैली में
आराम करना अच्छा रहेगा

दोस्तों के पास चलें

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05

बच्चों को जन्मदिन पर क्या उपहार दें?

बेशक

चकमक पुस्तकें

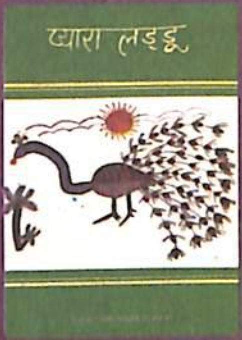

बाँकी-बाँकी धूप कविताएँ	16.00 रु.
ऋतुओं का स्कूल कविताएँ	22.00 रु.
मिट्टी की बात कहानियाँ	22.00 रु.
हड्डी और अन्य नाटक नाटक	21.00 रु.
नजानू के रंग नाटक	18.00 रु.
छुटकी गिलहरी कविता	12.00 रु.
प्यारा लड्डू बच्चों की कविताएँ	12.00 रु.
लोमड़ी और ज़मीन बच्चों की कहानियाँ	15.00 रु.
हमको फिर छुट्टी बच्चों की कविताएँ	10.00 रु.
आज़ादी की नुक्ती बच्चों की कहानियाँ	12.00 रु.

डाक व्यय अतिरिक्त

एकलव्य

ई-7/453, एच.आई.जी., अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म.प्र. 462 016

फोन - 0755 - 2463 380, 2464824

फैक्स - 0755 - 2461703 ई-मेल - eklavyamp@mantrafreenet.com

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना